22/3/2021 + PTO

विश्व जल दिवस पर विशेष

2021

जल की बर्बादी इसी तरह से होती रही तो एक दिन पानी मिलना मुश्किल हो जाएगा

विश्वव्यापी जल संकट व भारत में बढ़ती जा रही पानी की कमी से सब त्रस्त हैं। जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है फिर भी अधिकांश लोग जल बर्बाद करते हैं। विशेषकर जहां पानी आसानी से उपलब्ध है। जल कमी की स्थिति यदि यूं ही बढ़ती रही तो एक दिन पानी मिलना मुश्किल ही नहीं असम्भव हो जाएगा। पानी किसी मिल या फैक्ट्री में नहीं बनाया जा सकता। साऊथ अफ्रीका की राजधानी केपटाउन में पानी पर राशन लागू होना। अस्ट्रेलिया में पानी की कमी के कारण 5 हजार ऊंटों की गोली मारकर हत्या कर देना बहुत बड़ी चेतावनी है। लातूर और चेन्नई में रेल टैंकरों से पानी की सप्लाई करने जैसी नौबत कब आपके शहर में आ जाए आप चिन्तन नहीं कर रहे और जब ऐसी स्थिति आ जायेगी तब आप क्या करेंगे? केलिफोर्निया में सोने और पेट्रोलियम पदार्थों की तरह पानी सप्लाई के 586.5 डालर प्रति फुट पानी के सौदे पानी के बहुत महंगा होने के स्पष्ट संकेत हैं। भविष्य में पानी उपलब्धता/ स्थिति की कल्पना करें और उस कल्पना को ध्यान में रखते हुए जल का प्रयोग करें ताकि आपको और भावी पीढ़ी को जल की कमी के कारण असमय व अकारण जीवन से हाथ न धोना पड़े। 22 मार्च 'विश्व जल दिवस' है। धरातल पर 71 प्रतिशत पानी होते हुए भी वास्तव में कुल उपलब्ध पानी का लगभग एक प्रतिशत पानी ही जीवन रक्षक है इसलिए पानी का महत्व और बढ़ जाता है। वास्तव में जल के सर्वाधिक विस्तृत भंडार समुद्र का पानी जीवनोपयोगी नहीं है। उसे पीने योग्य बनाना आसान नहीं है। पानी के बिना मनुष्य ही नहीं वनस्पति, जीव जन्तु कोई भी जीवित नहीं रह सकेगा। पानी की महत्ता वास्तव में उस समय पता चलती है जब हमें बहुत प्यास लगी हो और पीने का पानी आस पास उपलब्ध न हो। तब हम दो घूंट पानी के लिए ही छटपटाने लगते हैं और ऐसा लगता है कि यदि तुरन्त पानी न मिला तो हमारे प्राण संकट में पड़ जायेंगे। आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर सभ्यता व बढ़ती जनसंख्या के कारण जंगल कम होते जा रहे हैं। मशीनीकरण से प्रदूषण व तापमान बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा कम हो रही है जिससे नदियों में जल घटता जा रहा है। फिर भी नदियों में कूड़ा-कर्कट, गन्दगी व जहरीला कचरा डाला जा रहा है। जल आपूर्ति के लिए नलकूपों द्वारा अधिक भूजल दोहन के कारण भू-जल स्तर गिरता जा रहा है। देश के 5723 जल ब्लाक में अधिकांश तेजी से डार्क जोन में होते जा रहे हैं और सन् 2025 तक 60 प्रतिशत से अधिक ब्लाक डार्क जोन में चले जाने का खतरा है। पूरे विश्व में घोर पेय जल संकट उत्पन्न हो रहा है और प्राणी का जीवन खतरे में पड़ रहा है। जल संकट को लेकर आज पूरा विश्व समुदाय चिन्तित है। मानवीय लालसा के कारण भूजल का अन्धाधुन्ध दोहन तो किया गया परन्तु जल को वापस धरती को लौटाया नहीं। इससे भूजल स्तर गिरा और भीषण जल संकट पैदा हुआ। पानी की कमी के कारणों को समझने और समझाने की आवश्यकता है और इसके लिए गली मोहल्ले में लगे सार्वजनिक नलों पर पानी के लिए होने वाले झगड़ों, खेत खलिहान में पानी की बारी के नाम पर होने वाले विवाद व कत्ल, विभिन्न प्रान्तों हरियाणा-पंजाब, महाराष्ट्र-कर्नाटक, तमिलनाडु-आन्ध्रप्रदेश के उच्चतम न्यायालय तक

रमेश गोयल

चल रहे जल विवाद तथा भारत-पाकिस्तान व अन्य देशों के बीच चल रहे जल विवादों की जानकारी महत्वपूर्ण है। भारत सरकार के जलशक्ति मन्त्रालय का 'कैच दी रेन' अभियान बहुत सार्थक व अनुकरणीय है। हमें लोगों को समझाना है कि जल बर्बाद न करें और वर्षा जल, जब भी गिरे जहां भी गिरे, संग्रहित करें। बड़े भवनों में रेनवाटर हारवैस्टिंग सिस्टम लगाए जाने के अतिरिक्त छत के वर्षा जल को पाइप से ड्रमों या टंकी में भरने, खुल्ले में बड़ा बर्तन रखकर वर्षा जल एकत्रित करने, जमीन में टंकी बनाकर उसमें वर्षा जल संग्रहित कर जल समस्या को कम करने में योगदान किया जा सकता है। प्रकृति की ओर से पूरा जल प्रदान किया जा रहा है परन्तु अव्यवस्था के कारण केवल 8 प्रतिशत वर्षाजल ही संग्रहित या संरक्षित यानि भूमिगत किया जा रहा है। अति वर्षा के कारण आने वाली बाढ़ से, सही योजनाएं को लागू करके, हर वर्ष होने वाले विनाश व हानि से बचा जा सकता है। देश में ऐसे लाखों सरकारी व निजी भवन हैं जहां वर्षाजल भूमिगत संरक्षण सिस्टम/रिचार्ज सिस्टम लगाना नियमानुसार अनिवार्य है परन्तु लगाए नहीं गए हैं। सरकार को इसे कठोरता से लेना चाहिए और सम्बन्धित व्यक्ति व संस्थान के साथ-साथ दोषी अधिकारियों के विरूद्ध भी कार्यवाही करनी चाहिए। आम आदमी वर्षाजल संग्रहण में रूचि दिखाते हुए वर्षा के समय खुल्ले स्थान पर बाल्टी, टब, ड्रम, घड़ा आदि रख दें जिसमें स्वतः जो पानी एकत्रित होगा, मानो कि हमने उस जल का निर्माण कर लिया। वर्षा जल जब भी गिरे और जहां भी गिरे उसे वहीं और उसी समय संग्रहित करें। वर्षा के समय घर के बड़े बर्तनों को खुल्ले में रखकर पानी एकत्रित करें और मान लो कि इस प्रकार संग्रहित जल का हमने निर्माण कर लिया। वर्षा जल संरक्षण/संग्रहण से स्वतः होने वाले कुछ अन्य लाभ भी हैं। इससे सीवरेज ओवरफ्लो होने की समस्या कम होगी व तारकोल से बनी सड़क, जो अधिक पानी खड़ा रहने के कारण टूटती है, कम टूटेंगी। पानी सड़कों पर नहीं होगा या कम होगा तो स्थानीय यातायात की असुविधाएं कम होंगी वहीं पानी खड़ा रहने से पैदा होने वाला मच्छर नहीं होगा जिससे बीमारियां कम होंगी और चिकित्सा खर्च बचेगा और शारीरिक कार्य क्षमता बनी रहेगी। वाटर ट्रीटमैंट प्लांट भी कम लगाने पड़ेंगे।

(लेखक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित जल स्टार, जल चालीसा रचयिता तथा जलशक्ति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा सम्मानित वाटर हीरो अवार्डी है।)

पल पल

फतेहाबाद, शुक्रवार, 7 अगस्त 2020

सार समाचार

एसवाईएल पर सुप्रीम कोर्ट स्वयं ही निर्णय दे : गोयल

पल पल न्यूज: सिरसा, 7 अगस्त। माननीय उच्चतम न्यायालय का सतलुज यमुना लिंक (एसवाईएल) विवाद पर यह निर्देश कि दोनों प्रान्तों के मुख्यमन्त्री बैठकर हल निकालें, केवल विषय को लम्बित रखने वाली बात है क्योंकि माननीय उच्चतम न्यायालय के पूर्व आदेशों निर्देशों को धत्ता बताते हुए पंजाब के मुख्यमन्त्री चाहे प्रकाश सिंह बादल हों या अमरेन्द्र सिंह कहते रहे हैं कि हरियाणा को पानी की एक बूंद भी नहीं देंगे। इस निर्णय पर राष्ट्रीय संस्था पर्यावरण प्रेरणा के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारत विकास परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय मन्त्री पर्यावरण जल स्टार रमेश गोयल ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चुनाव के समय हरियाणा को पंजाब का छोटा भाई बताने वाले बादल साहब की पानी के विषय में कथनी और करनी दोनों आपत्तिजनक रही हैं। सर्वविदित है कि 212 कि.मी. लम्बी नहर में से हरियाणा ने अपने हिस्से की 91 कि.मी. नहर का निर्माण वर्षों पूर्व पूरा कर दिया था। पंजाब की बदनियत इसी से स्पष्ट है कि उसने तो नहर के लिए अधिग्रहीत की गई किसानों की भूमि को वापिस करने का प्रस्ताव पारित कर दिया और उसके बाद लोगों ने खुदाई की हुई नहर में मिट्टी डालकर उसे पाट दिया। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2002 व 2004 में उच्चतम न्यायालय ने हरियाणा के हक में निर्णय किया था और 2004 में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने विधानसभा में उस निर्णय को निरस्त करने के लिए प्रस्ताव रखा जिसे अकाली दल व अन्यों के पूर्ण सहयोग से शत प्रतिशत मतों से पारित करवाकर उच्चतम न्यायालय के निर्णय का कत्ल कर दिया। उन्होंने बताया कि 1996 में उच्चतम न्यायालय पहुंचे एसवाईएल नहर विवाद पर न्यायालय ने 2002 व 2004 में दो बार पंजाब सरकार को निर्देश दिए थे कि पंजाब अपने हिस्से में नहर बनाने का काम पूरा करे। कितना खेदजनक है कि पंजाब विधानसभा ने 2004 में एक बिल पास करके पानी सम्बन्धी हरियाणा के साथ हुए समझौतों को ही रद कर दिया। इसके विरूद्ध मामला पुनः उच्चतम न्यायालय पहुंचा। तत्कालीन राष्ट्रपति ने भी इस एकाकी निर्णय पर प्रश्न चिन्ह तो लगाये परन्तु कोई कार्यवाही नहीं की जिससे उनके हौसले और बढ़ गये। उन्होंने कहा है कि इसी कारण पंजाब सरकार की इतनी हिम्मत हो गई है कि उन्होंने नहर बनवाने के कार्य को पूरा करने की बजाय न केवल उस स्थान को मुफ्त में पूर्व मालिकों को हस्तांतरित कर दिया बल्कि नहर वाले स्थान को पुनः मिट्टी से भरने में भी सहयोग किया। 10 नवम्बर 2016 के उच्चतम न्यायालय के आदेश के विरूद्ध पंजाब सरकार व सभी विधायकों की कार्यवाही निंदनीय है तथा यह सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना व अपमान है। कांग्रेस के 42 विधायकों द्वारा विधायक पद से त्यागपत्र भी इसी श्रेणी में हैं क्योंकि अमरिन्द्र सिंह सहित इनमें से अधिकांश विधायक 2004 के कुकृत्य में सम्मिलत थे। कुल 214 किलोमीटर (पंजाब 122 कि.मी. व हरियाणा 92 कि.मी.) लम्बी सतलुज यमुना लिंक नहर का आरम्भ 8 अप्रैल 1982 को तत्कालीन प्रधानमन्त्री इंदिरा गांधी ने स्वयं अपने हाथों से पटियाला जिला के कपुरी गांव में खुदाई करके किया था जिसका लगभग 90 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका था परन्तु 1990 में अचानक पंजाब सरकार ने बनी बनाई नहर को बन्द करवाना आरम्भ कर दिया। उनका यह कुकृत्य राष्ट्रद्रोह से कम नहीं है। जनता व सरकार के अरबों रूपये न केवल मिट्टी में मिला दिए बल्कि भारत के संघीय ढांचे को भी पंजाब सरकार ने चुनौती दे डाली है। विधानसभा चुनावों में पंजाब के तत्कालिन मुख्यमन्त्री प्रकाश सिंह बादल हरियाणा को पंजाब का छोटा भाई बता कर हरेलो के लिए

30/4/2021

2

विश्व पृथ्वी दिवस 2021 पर विशेष

हम सब को मिलकर करना होगा पृथ्वी को बचाने का संकल्प

22 अप्रैल को हर वर्ष विश्व पृथ्वी दिवस जलवायु परिवर्तन के विषय में जागरूकता हेतु वैश्विक स्तर पर मनाया जाता है। सर्वप्रथम 1970 में अमेरिका में सांसद नेल्सन ने पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियन्त्रण के लिए पृथ्वी दिवस का आयोजन किया। अधिकतम विद्यार्थी इस आयोजन में भागीदारी कर सकें इसलिए परीक्षा समाप्ति के बाद अन्य सुविधाओं का ध्यान रखते हुए 22 अप्रैल की तिथि निश्चित की गई थी और इस आयोजन में रिपब्लिकन व डेमोक्रेटस सांसदों सहित गरीब-अमीर, शहरी व किसान, व्यापारी व मजदूर नेताओं का अपार समर्थन मिला था। इसी का परिणाम था कि अमेरिका ने नेशनल एन्वायरमैंटल एजुकेशन एक्ट, ओकुपेशनल सैफ्टी एंड हैल्थ एक्ट, क्लीन एयर एक्ट लागू किए गए। 2 वर्ष बाद ही क्लीन वाटर एक्ट (स्वच्छ जल अधिनियम) सहित अन्य ऐसे अधिनियम लागू किए गए। पृथ्वी दिवस 1990 में वैश्विक हो गया और 141 देश व 20 करोड़ लोगों ने आयोजनों में भागीदारी की। परिणाम स्वरूप 1992 में संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी दिवस आयोजन में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने पृथ्वी दिवस संस्थापक सांसद नेल्सन को अमेरिका के सर्वोच्च सम्मानः प्रेजिडेंशियल मैडल आफ फ्रीडम से सम्मानित किया। पर्यावरण संरक्षण आन्दोलन की हर वर्ष मनाए जाने वाली वर्षगांठ में 2020 में स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाया गया व वर्ष 2021 का ध्येय वाक्य है 'रिस्टोर अवर अर्थ- हमारी पृथ्वी को परिस्थापित करें'। 2010 में प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों, तेल माफिया व भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा विरोध, जनता की अरूचि व पर्यावरण सम्बन्धित लोगों के गुटों में बंटा होने के बावजूद पृथ्वी दिवस पर विशाल सफल आयोजन किए गए। जलवायु परिवंतन पर चिन्तन करने के लिए 2015 में फ्रांस में पैरिस समझौता हुआ जिसमें 192 देशों ने भाग लिया था परन्तु किसी भी देश ने गम्भीरता से तापमान कम करने के लिए प्रयास नहीं किए। वर्ष 2021 में न्यूजीलैंड जलवायु परिवर्तन कानून लागू करने वाला विश्व का प्रथम देश बन गया है जो अपने देश को 2050 तक कार्बन मुक्त राष्ट्र बनाना चाहता है। इस समय पृथ्वी दिवस पर 190 से अधिक देश व करोड़ों लोगों की भागीदारी रहती है। इस वर्ष 22-23 अप्रैल को अमेरिका में जलवायु सम्मेलन प्रस्तावित है। बढ़ते प्रदूषण के कारण बढ़ता तापमान जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है। जहरीली

रमेश गोयल

गैस उत्पादन, अधिक व अनियंत्रित वाहन, उद्योग, धुआं व गन्दगी तापमान बढ़ने का मुख्य कारण हैं। प्रदूषित वातावरण मानव जीवन ही नहीं सम्पूर्ण जीवों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आप और हम यानी आम आदमी क्या करे। जलवायु परिवर्तन तापमान कम होने से ही सही होगा अतः हम प्रदूषण कम फैलायेंगे तो तापमान नहीं बढ़ेगा। वृक्षों के काटने से प्रदूषण बढ़ता है। जल व वायु प्रदूषण भी उनमें एक है। यह न समझें कि हमारे एक पेड़ काटने से या थोड़ा सा कचरा नदी में डालने से या जला देने से क्या होगा। आप उन्हें गुणा करें अपने देश की आबादी से और उत्तर को देखकर सोचें कि लाखों टन बनने वाले इस कचरे का निदान कैसे हो। विश्व पृथ्वी दिवस पर हम संकल्प करें कि कचरा नहीं बढायेंगे। व्यर्थ वस्तुओं को सदुपयोग योग्य बनायेंगे, कूड़ा-दान में डालने से पूर्व पुनः प्रयोग हो सकने वाली वस्तुओं का पुनः प्रयोग करेंगे। जल को न बर्बाद करेंगे और न ही दूषित करेंगे, वायु प्रदूषण रोकने निमित किसी भी प्रकार का कचरा नहीं जलायेंगे। हम सब मिलकर प्रयास करेंगे तभी पृथ्वी दिवस की साथर्कता होगी और पर्यावरण संरक्षित व भविष्य सुरक्षित होगा। **(लेखक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित पर्यावरणविद व जल स्टार है)**

8 मई 2011

पाठकीय

पुरस्कृत पत्र

घातक है ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण की घातकता को मनुष्य गंभीरता से नहीं लेता, जबकि शोर से न केवल बहरापन होता है, बल्कि उससे दैनिक कार्यकलापों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। चिकित्सकों व विशेषज्ञों द्वारा ३० डेसीबल से ऊपर की ध्वनि को कर्कश शोर का नाम दिया गया है। एक शोध के अनुसार १२० डेसीबल ध्वनि से ऊपर के शोर में रहने वाला व्यक्ति आत्महत्या तक के लिए मजबूर हो जाता है। तीसरी शताब्दी तक चीन में मृत्यु दण्ड प्राप्त व्यक्ति को अधिक शोर वाले स्थान पर रखकर मृत्यु दण्ड दिया जाता था। इस समय देश के अधिकांश नगरों में वाहनों का शोर ९० डेसीबल तक पहुंच गया है जिसे लगातार सुनने से व्यक्ति स्थाई रूप से बहरा हो सकता है। ११५ डेसीबल का शोर लगातार १५ मिनट तक सुनने से ही बहरापन तथा मानसिक परेशानी व अन्य रोग हो सकते हैं। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक तनाव बढ़ता है, एकाग्रता नहीं रहती तथा व्यक्ति उच्च रक्तचाप का रोगी बनता है, जो हृदय रोग का कारण बनता है।

ध्वनि प्रदूषण के लिए मोटर वाहन, पटाखे, जनरेटर व कल-कारखानों के अतिरिक्त लाउडस्पीकर ज्यादा दोषी हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक व धार्मिक आयोजनों में भी लाउडस्पीकरों का दुरुपयोग अधिक हो रहा है। ऊंचे से ऊंचे स्थान पर हार्न लगाकर तेज आवाज में लाउडस्पीकर बजाने, लाउडस्पीकर द्वारा विज्ञापन करके सामान बेचने से भी शान्तिपूर्ण जीवन में बड़ी बाधा पहुंचती है।

मौन, ध्यान, योग, प्रार्थना आदि कोई भी शोर को स्वीकृति नहीं देता। मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा धार्मिक संस्थानों द्वारा लाउडस्पीकर के प्रयोग पर लगाई गई पाबन्दी महत्वपूर्ण है और इससे भी महत्वपूर्ण उच्चतम न्यायालय का ३० अगस्त २००० का वह निर्णय है कि कोई मत-पंथ लाउडस्पीकर बजाकर दूसरों की शान्ति में विघ्न डालने को नहीं कहता। फिर भी पांथिक स्वतंत्रता के नाम पर पूजा-स्थलों आदि पर ऊंचे स्थानों पर लाउडस्पीकर लगे हैं।

उच्चतम न्यायालय के अनुसार एक सभ्य समाज में मजहब के नाम पर ऐसी गतिविधि की अनुमति नहीं दी जा सकती। लाउडस्पीकर बजाने वाले को यह नहीं भूलना चाहिए कि पड़ोस के बच्चे को भी शान्तिपूर्ण वातावरण में सोने, विद्यार्थी को अपने अध्ययन पर एकाग्रचित होने, वृद्ध व अस्वस्थ व्यक्ति को बिना किसी ध्वनि प्रदूषण के आराम करने का पूर्ण अधिकार है। उक्त निर्णय के बावजूद उस पर पूर्ण प्रतिबंध न लग पाना आश्चर्यजनक, दु:खद व चिंतनीय है।

टीबी के जीवाणु की खोज करने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक रोबट कुक द्वारा १९४४ में भविष्यवाणी की गई थी कि जिस प्रकार मनुष्य हैजे से लड़ रहा है उसी प्रकार भविष्य में ध्वनि प्रदूषण से लड़ने की आवश्यकता होगी। वाहनों पर लगे उच्च दबाव वाले हार्न प्रदूषण को बढ़ाने के साथ-साथ दुर्घटनाओं को भी बढ़ावा देते हैं।

पटाखे ध्वनि प्रदूषण का एक अन्य बड़ा कारण हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार पटाखे इतने धमाकेदार होते हैं कि उनसे १५० डेसीबल तक आवाज होती है, जो गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्जित है। पटाखों से ध्वनि प्रदूषण के अतिरिक्त वायु प्रदूषण भी बहुत अधिक होता है। अरबों, खरबों रुपयों के पटाखों को आग लगाकर हमारे देशवासी अपना व आने वाली पीढ़ी का अत्यधिक नुकसान कर रहे हैं। कलकत्ता उच्च न्यायालय द्वारा १९९६-९७ में दिए गए एक निर्णय के अनुसार बंगाल में तेज ध्वनि वाले पटाखे चलाने पर पूर्ण प्रतिबंध है।

जनरेटर भी ध्वनि व वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण है, जो आस-पास के लोगों को बहरा कर सकता है। बिजली की कमी के कारण उसका उपयोग कई बार अनिवार्य हो जाता है, परन्तु मनुष्य के स्वास्थ्य पर सुविधा की तुलना में कहीं अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ध्वनि प्रदूषण रहित जनरेटर ही प्रयोग करने की कानूनी बाध्यता होनी चाहिए।

-रमेश गोयल

२०, आरएसडी कालोनी, सिरसा (हरियाणा)

हर सप्ताह एक चुटीले, हृदयग्राही पत्र पर १०० रुपए का पुरस्कार दिया जाएगा।-सं.

विश्व पर्यावरण दिवस 2021

"" रमेश गोयल 5/6/2021

लोगों को पर्यावरण की रक्षा व सुरक्षा के प्रति जागरुक करने हेतु 5 जून को हर वर्ष "विश्व पर्यावरण दिवस" विश्व स्तर पर मनाया जाता है। पर्यावरण यानि **यानी पौधारोपण व वृक्ष रक्षण, जल–ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण की रोकथाम, प्लास्टिक का प्रयोग रोकना व स्वच्छता"**। पर्यावरण दिवस सर्व प्रथम अमेरिका में 1974 में आयोजित किया गया था और तब से निरन्तर हर वर्ष किसी न किसी देश में नए ध्येय वाक्य के साथ यह आयोजित किया जाता है। 48 वर्ष पूर्व आरम्भ यह जागरूकता अभियान वर्ष 2019 में चीन में "वायु प्रदूषण रोकें" ध्येय वाक्य के साथ 5 जून को आयोजित किया गया। हम सांस लेना बन्द नहीं कर सकते परन्तु वायु की शुद्धता बढ़ाने के लिए प्रयास अवश्य कर सकते है। 2020 में ध्येय वाक्य था जैव–विविधता और 2021 का ध्येय वाक्य है 'पारिस्थितिकी तंत्र बहाली" (इको सिस्टम रिस्टोरेशन) जैसे पेड़ लगाना, शहर को हरा भरा बनाना, नदियों और तटों की सफाई करना आदि। इस बार पांच जून को पाकिस्तान में वैश्विक स्तरीय कार्याक्रम प्रस्तावित है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के तत्वावधान में वैश्विक स्तर पर आयोजित इस कार्यक्रम में 150 से अधिक देश भागीदारी करते हैं और विश्व भर में होने वाले आयोजनों में करोड़ों लोग। विश्व पृथ्वी दिवस 2021 का ध्येय वाक्य "रिस्टोर अवर अर्थ– हमारी पृथ्वी को परिस्थापित करें भी इससे मिलता जुलता था। विश्व पर्यावरण दिवस के ध्येय वाक्य का अर्थ भी वही है यानि वैश्विक स्तर पर पृथ्वी व प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा की चिन्ता की जा रही है ।

विश्व स्तर पर वायु प्रदूषण के कारण 92 प्रतिषत लोग शुद्ध हवा में सांस नहीं ले पाते। वायु प्रदूषण सुधार हेतु विश्व में 5 लाख करोड़ डालर प्रतिवर्ष खर्च होने के बावजूद 70 लाख लोगों की प्रदूषित वायु के कारण असामयिक मृत्यू हो जाती है जिनमें से अकेले एशिया में 40 लाख लोग प्रतिवर्ष मरते है। पर्यावरण दिवस का उद्देश्य है कि व्यक्ति, समाज व सरकारें साथ मिलकर अक्षय उर्जा का अन्वेषण व हरित प्राद्योगिकी को प्रोत्साहित करना चाहिए और विश्व स्तर पर वायु की गुणवता को शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। वास्तव में प्रदूषण बढ़ने से वैश्विक तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण जलवायु परिवर्तन हो रहा है जो प्राकृतिक आपदाओं का मुख्य कारण है और पर्यावाण के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है। जलवायु परिर्वतन पर चिन्तन करने के लिए 2015 में फ्रांस में पैरिस समझौता हुआ जिसमें 192 देशों ने भाग लिया था परन्तु किसी भी देश ने गम्भीरता से तापमान कम करने के लिए प्रयास नहीं किए। वर्ष 2021 में न्यूजीलैंड जलवायु परिवर्तन कानुन लागु करने वाला विश्व का प्रथम देश बन गया है जो अपने देश को 2050 तक कार्बन मुक्त राष्ट्र बनाना चाहता है।

वृक्षों के काटने से प्रदूषण बढ़ता है। जल व वायु प्रदूषण भी उनमें एक है। यह न समझें कि हमारे एक पेड़ काटने से या थोडा सा कचरा नदी में डालने से या जला देने से क्या होगा। आप उन्हें गुणा करें अपने देश की आबादी से और उत्तर को देखकर सोचें कि लाखों टन बनने वाले इस कचरे का निदान कैसे हो। विश्व पर्यावरण दिवस पर हम संकल्प करें कि कचरा नहीं बढायेंगे। व्यर्थ वस्तुओं को सदुपयोग योग्य बनायेंगे, कूड़ा–दान में डालने से पूर्व पुनः प्रयोग हो सकने वाली वस्तुओं का पुनः प्रयोग करेंगे। जल को न बर्बाद करेंगे और न ही दूषित करेंगे, वायु प्रदूषण रोकने निमित्त किसी भी प्रकार का कचरा नहीं जलायेंगे। हम सब मिलकर प्रयास करेंगे तभी पर्यावरण दिवस की साथर्कता होगी और पर्यावरण संरक्षित व भविष्य सुरक्षित होगा।

वृक्ष आक्सीजन का एक मात्र प्राकृतिक स्त्रोत ही नहीं है बल्कि प्रदूषण को कम करने में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। परन्तु मध्य प्रदेश के बक्सवाहा जंगल के लगभग 2.15 लाख पेड़ हीरे प्राप्ति हेतु काटे जाने हैं जो इस देश में प्राकृतिक संसाधनों विशेषकर वृक्ष काटने की अब तक की सबसे बड़ी त्रासदी होगी। इस जंगल से जन समान्य को मिलने वाली जीवनदायिनी आक्सीजन स्तर ही प्रभावित नहीं होगा बल्कि अन्य अनेक स्वतः मिलने

वाले प्राकृतिक लाभ व फल भी समाप्त हो जायेंगे जिसकी अपूर्णीय क्षति किसी अन्य प्रकार से पूर्ण नहीं की जा सकेगी। जंगल में रहने वाले लाखों पशु पक्षी बेघर ही नहीं हो जायेंगे बल्कि अधिकांश मर जायेंगे। देश ने 2020 व 2021 की महामारी में वृक्षों व आक्सीजन की महता को प्रत्यक्ष अनुभव किया है। यदि यूं ही जंगल कटते रहे तो भविष्य में ऐसी त्रासदियों व महामारियों की सम्भवना और भी बढ़ेंगी। यद्यपि पर्यावरण को पूर्ववत करना सम्भव नहीं लगता किन्तु मनुष्य संगठित होकर प्रयास करें और अधिकाधिक वृक्षारोपण के साथ साथ सड़क मार्ग चौड़ा करने, कलोनियां या शहर बसाने, उद्योग स्थापित करने व विकास के नाम पर पेड़ काटने बन्द करदे तो पूर्ण शुद्ध पर्यावरण सम्भव है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने मथुरा (उतर प्रदेश) के कृष्ण–गोवर्धन रोड़ प्राजैक्ट के लिए 3 हजार पेड़ काटने की सरकार की योजना पर संज्ञान लेते हुए कहा है कि सड़क को सीधा बनाने की क्या आवश्यकता है। जहां पेड आए वहां से घुमाकर सड़क बनाएं इससे वाहनों की गति धीमी होगी और दुर्धटनाएं भी कम होगी। मुख्य न्यायधीश एसए बोवेड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने देश में बढ़ रही सड़क दुधटनाओं पर चर्चा करते हुए तेज गति से चलते हुए वाहनों का कारण भी सीधी सड़क को माना है। माननीय मुख्य न्यायधीश ने सरकार से पुछा है कि 90–100 वर्ष पूराने वृक्ष को काटे जाने की पूर्ति किसी भी दशा में नए वृक्ष लगाकर नहीं की जा सकती। बक्सवाहा जंगल के विषय में भी उच्चतम न्यायालय अवश्य संज्ञान लेगी ऐसा विश्वास है।

वायु प्रदूषण से जहां सामान्य जीवन दूभर होता जा रहा है और मास्क लगाकर भी सांस लेना सहज नहीं होतां। खाद्य असुरक्षा बढ़ती है वहीं पानी की कमी भी बढ़ती है और सुखा–अकाल की स्थिति उत्पन्न होती है इससे समुद्र तल भी प्रभावित हो रहा है। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए हमें प्रदूषित सामग्री (कच्चा माल) की बजाय यदि उपलब्ध हो तो अन्य सामग्री का उपयोग करना चाहिए। अग्नि युक्त कार्यो को कम करना चाहिए तथा प्रदूषण नियन्त्रण संयत्रों का अधिक प्रयोग करना चाहिए। पैट्रोल व डिजल की बजाय सीएनजी का प्रयोग करना चाहिए। उद्योगों, जनरेटर व अन्य ऐसे सभी संयत्र प्रदूषण नियत्रंक ही होने चाहिएं। कूड़ा कचरा आदि बिल्कुल न जलायें। रिसाईक्लिंग की व्यवस्था करें। गीला कूड़ा खाद में बदलें। अधिकाधिक वृक्षं लगाएं क्योंकि वृक्ष ही वायु प्रदूषण रोकने में सर्वाधिक सक्षम व सार्थक है। सौर ऊर्जा का प्रयोग करके तापमान घटानें में सहयोग करें। प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद न करें व उनका संरक्षण अपने दैनिक जीवन का अंग बनाएं। 3 आर रिड्यूस (कम प्रयोग), रियूज (पुनः प्रयोग) व रिसाईकिल (पुनः चक्रण) को समझकर कार्य करें और हम सब इस दिन यही विशेष संकल्प करें।

रमेश गोयल
(लेखक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित पर्यावरणविद् व जल स्टार हैं। जल चालीसा रचयिता तथा
जलशक्ति मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा सम्मानित ''वाटर हीरो अवार्डी हैं।) मो. 9416049757

संभल जाओ, वरना पीने के लिए

रमेश गोयल

आज विश्व जल दिवस है। हर दिन का अपना एक विशेष महत्व होता है और उस दिन हम अपने जीवन के उस पक्ष को मजबूत करने हेतु कार्य करते हैं। वास्तव में जल के सर्वाधिक विस्तृत भंडार समुद्र का पानी जीवनोपयोगी नहीं है। उसे पीने योग्य बनाना आसान नहीं है। धरातल पर 71 प्रतिशत पानी होते हुए भी वास्तव में कुल उपलब्ध पानी का लगभग एक प्रतिशत पानी ही जीवन रक्षक है इसलिए पानी का महत्व और बढ़ जाता है। पानी के बिना मनुष्य ही नहीं वनस्पति, जीव जन्तु कोई भी जीवित नहीं रह सकेगा। पानी की महत्ता वास्तव में उस समय पता चलती है जब हमें बहुत प्यास लगी हो और पीने का पानी आस पास उपलब्ध न हो। तब हम दो घूंट पानी के लिए ही छटपटाने लगते हैं और ऐसा लगता है कि यदि तुरन्त पानी न मिला तो हमारे प्राण संकट में पड़ जायेंगे। आधुनिकरण की ओर अग्रसर सभ्यता व बढ़ती जनसंख्या के कारण जंगल कम होते जा रहे हैं। मशीनीकरण से प्रदूषण व तापमान बढ़ रहा है। जलवायू परिवर्तन के कारण वर्षा कम हो रही है जिससे नदियों में जल घटता जा रहा है। फिर भी नदियों में कुड़ा-कर्कट, गन्दगी व जहरीला कचरा डाला जा रहा है। जल आपूर्ति के लिए नलकूपों द्वारा अधिक भूजल दोहन के कारण भू-जल स्तर गिरता जा रहा है। देश के 5723 जल ब्लाक में अधिकांश तेजी से डार्क जोन में होते जा रहे हैं और सन् 2025 तक 60 प्रतिशत से अधिक ब्लाक डार्क जोन में चले जाने का खतरा है। पूरे विश्व में घोर पेय जल संकट उत्पन्न रहा है और प्राणी का जीवन खतरे में पड़ रहा है।

पृथ्वी, जो चारों ओर पानी से घिरी है, वही अब पानी के अभाव से त्रस्त होती जा रही है। अब तक वैज्ञानिकों ने जिन ग्रहों की खोज की है, वहां पानी नहीं है। विश्व के सबसे धनी खाड़ी के देश आजकल अपने यहां दुनिया की सबसे सस्ती व सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु पानी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यहां तेल तो हर जगह है लेकिन पानी की कीमतें जिस तेजी से बढ़ रही हैं उसका कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता। इन देशों के आस पास समुद्र तो है लेकिन उसका पानी न तो पिया जा सकता है और न ही उससे खेती हो सकती है। ने आधुनिक तकनीक अपनाई है जो केवल 20 प्रतिशत पानी खेतीबाड़ी के लिए उपयोग करता है। किस फसल को कितना पानी देना चाहिए उसकी बूंदों तक का हिसाब रखा जाता है। दुनिया के अन्य देश जहां पानी की कमी है, वे इस तकनीक को इस्त्रायल से प्राप्त करते हैं। भारत ने भी इस मामले में इस्त्रायल को अपना आदर्श बनाया है। दजला और फुरात नदी पर तुर्की ने तीन, सिरिया और इराक ने दो बांध बनाकर अपनी समस्या हल की है लेकिन इनमें किसी प्रकार का आपसी विवाद खाड़ी के देशों को पानी के लिए महायुद्व की ओर धकेल देगा। जापान के क्योटो शहर में सम्पन्न विश्व जल फोरम की बैठक में जल समस्या के हल हेतु लगभग 100 संकल्प पारित किए गये जिसमें 182 देशों के लगभग 24000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

सन् 2025 तक हमारी जल खपत 1530 अरब घन मीटर हो जाएगी परन्तु वर्षा के बिना हमारे पास कोई दूसरी जल सम्पदा नहीं है इसलिए वर्षा की एक-एक बूंद को बचाना और धरती में रिचार्ज करना ही सबसे जरूरी कार्य हो जाता है। वर्ष 2005 में अलीगढ़ में प्रकाशित समाचार अनुसार एक सप्ताह में पानी के अभाव में हजारों पक्षी मर गए थे। न्यायमूर्ति शम्भूनाथ श्रीवास्तव ने इसका संज्ञान लेते हुए सरकार से जानकारी ली तब यह तथ्य सामने आया कि उत्तर प्रदेश में 1952 में 392000 हैक्टेयर भूमि में

विश्व जल दिवस (22 मार्च) पर विशेष

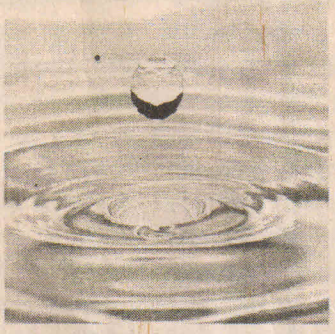

तालाब थे जिनमें से अब अधिकांश भवन, कल कारखाने या खेती में प्रयुक्त हो चुके हैं। कृषि में पानी की खपत बहुत अधिक होती है। खारे व क्षारीय पानी के कारण उपजाऊ भूमि भी बंजर बन जाती है। खेती के लिए कम पानी से अधिक सिंचाई ही एक मात्र हल है और इसके लिए सूक्ष्म सिचाई प्रणाली व फव्वारा पद्धति बहुत कारगर सिद्व हुई है। पानी की बर्बादी न करते हुए, वर्षा जल संग्रहण, वाटर हारवैस्टिंग व रिचार्जर के द्वारा पानी की कमी को कुछ कम किया जा सकता है। अधिक पानी की खपत वाली फसलों धान व गन्ना की खेती कम की जाये तथा तिलहन व दलहन की ओर अधिक ध्यान दिया जाये तो पानी भी बचेगा और देश को भी लाभ होगा।

पीने के पानी का यह संकट दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है। छोटे स्थानों की अपेक्षा महानगरों में बहुत विकट परिस्थितियां हैं। दिल्ली को प्रतिदिन 1950 मिलियन गैलन पानी चाहिए किन्तु दिल्ली जल बोर्ड 850 मिलियन गैलन पानी ही उपलब्ध करा पाता है। दिल्ली में 6000 लीटर पानी

22-03-2017

भी नहीं मिलेगा पानी

निशुल्क दिया जाता था जिसे प्रथम जनवरी 2010 से शुन्य कर दिया गया तथा पानी दर पहले से 3 गुणा कर दी गई और 31 जनवरी तक पानी मीटर लगवाने अनिवार्य कर दिए गए। पाइप लगाकर कार धोने पर जुर्माने का प्रावधान भी किया गया है। एक अनुमान अनुसार अगले 20 वर्षों में देश में जल की मांग 50 प्रतिशत बढ़ जायेगी जबकि 1947 में देश में मीठे जल की उपलब्धता 6000 घनमीटर थी जो 2000 में घटकर मात्र 2300 घनमीटर रह गई और 2025 तक 16000 घन मीटर हो जाने का अनुमान है। भारत में वर्षा जल का मात्र 15 प्रतिशत जल ही उपयोग होता है, शेष समुद्र में चला जाता है।

स्वच्छ जल की अनुपलब्धता कई क्षेत्रों में तनाव उत्पन कर रही है। उतरी अफ्रीका और पश्चिमी एशिया में स्थिति गम्भीर हो चुकी है। संसार की लगभग दो तिहाई आबादी उन देशों में रह रही है जहां पानी की बहुत कमी है। गली मोहल्लों के सार्वजनिक नलों पर पानी के लिए झगड़े सामान्य बात है परन्तु यह सब यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि हरियाणा-पंजाब का भाखड़ा-ब्यास जल बंटवारे के लिए जल विवाद, दिल्ली-हरियाणा का यमुना जल विवाद, कर्नाटक-तामिलनाडू का कावेरी जल विवाद वर्षों पुराना है। भारत पाक सम्बन्धों में आतंकवाद जैसे विषयों के अतिरिक्त जल बंटवारा भी एक विवादित विषय है और पाक योजना आयोग के अनुसार रावी जल बंटवारा सही नहीं किया तो भारत पाक के बीच युद्ध हो सकता है। युद्ध की यह बात भी नई नहीं है क्योंकि जल-वैज्ञानिकों की चेतावनीपूर्ण भविष्यवाणी अनुसार यदि तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो वह पानी के नाम पर होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के वर्ष 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफपानी नहीं मिलता है और यह संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। 2031 तक वर्तमान से चार गुणा अधिक पानी की आवश्यकता होगी। बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में बहुत पानी बरबाद करते हैं। विख्यात जल विशेषज्ञ प्रो0 असित बिस्वास के अनुसार 'बीते दो सौ वर्षों के मुकाबले आने वाले 20 वर्षों में जल प्रबन्धन की आवश्यकता अधिक होगी। जल बहुत रोगों में दवा का काम भी करता है। ठंडे ओर गर्म जल में अलग अलग औषधिय गुण हैं। गर्म पानी का लाभ वात रोगों जैसे जोड़ों का दर्द, घुंटने का दर्द, गठिया, कंधे की जकड़न में होता है। पानी का कोई विकल्प नहीं। प्यास लगने पर पानी ही पीएं कोल्ड ड्रिंक्स आदि नहीं । अगर हम पानी की बचत नहीं करेंगे तो 'बिन पानी सब सून' अनुसार एक दिन ऐसा आएगा कि पानी के बिना हम तड़फने लगेंगे। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। यदि सब लोग मिलकर यह संकल्प कर लें कि हम पानी को बरबाद नहीं होने देंगे तो वहां कभी भी पानी की कमी नहीं होगी अन्यथा आने वाली पीढ़ी की क्या दशा होगी, हमें सोचना होगा। पानी की बर्बादी के प्रति जागरूकता के लिए ही संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2013 को अन्तर्राष्ट्रीय जल संरक्षण वर्ष घोषित किया था और हर वर्ष 22 मार्च को ''विश्व जल दिवस'' के प्रतीक रूप में याद किया जाता है।

-लेखक पर्यावरण एवं जल संरक्षण को समर्पित कार्यकर्ता तथा जल स्टार व अनेक पुरुस्कारों से सम्मानित है। 9416049757

एक टपकता नल 300 गैलन पानी बर्बाद करता है

रमेश गोयल

विश्व जल दिवस २०१८ पर विशेष

लेखक पर्यावरण एवं जल संरक्षण को समर्पित कार्यकर्ता, प्रतिष्ठित आयकर व्यवसायी व वरिष्ठ नागरिक और जल चालीसा रचयिता हैं

भारत वर्ष में लगभग ६७ जल स्त्रोतों में २१ प्रतिशत ही पानी के बचा है। मैं गत कई वर्षों से अपने जल जागरूकता अभियान में कहता आ रहा हूं कि यदि हम नहीं संभले तो पानी राशन में मिलने लगेगा। यह खेदजनक स्थिति साऊथ अफ्रीका की राजधानी केपटाउन में आ चुकी है और वहां १२ अप्रैल से सेना के नियन्त्रण में पानी राशन में मिलने लगेगा। विश्व के ११ अन्य शहर इसी सूचि में हैं। ब्राजील की आर्थिक राजधानी सायो पालो, भारत का स्वच्छ शहर बंगलौर, चीन का बीजिंग, नील नदी आधारित मिस्र का कायरो, इंडोनेशियाई राजधानी जकार्ता, रूस में मास्को, टर्की की राजधानी इस्तानबुल, मैक्सिको शहर, ब्रिटेन का लन्दन, जापान में टोक्यो, अमेरिका के फलोरिडा प्रान्त का मिआमी भी इसी श्रेणी की लाईन में है। आप अपने शहर को इस सूचि से बाहर या बहुत नीचे रखना चाहते हैं तो आप हमारी बात अवश्य मानें और पानी को घी की तरह प्रयोग करना आरम्भ करें। बूंद बूंद बचायें।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार दुनिया की दो तिहाई अबादी को २०२५ के बाद सूखे की स्थिति में जीना पड़ेगा। पूरी दुनिया में पानी की मांग अगले १० वर्षों में ४० प्रतिशत तक बढ़ जायेगी और इस समय भी आधे से ज्यादा भारत पानी की कमी से जूझ रहा है। हमारे देश की लाखों महिलाएं दिन के ५ से ६ घंटे अपने परिवार के लिए पीने का पानी इकट्ठा करने के लिए लगाती है। कई बार बच्चे भी लगते हैं इस काम में। आखिर कौन है इन सबके लिए जिम्मेवार। धरती पर बढता जन संख्या का बोझ या इन्सान की बढ़ती पैसों की भूख और गैर जिम्मेदार रवैया या फिर शायद ये सभी।

एक अनुमान के अनुसार विश्व में उपलब्ध पानी का मात्र ४ प्रतिशत भारत में है जबकि जनसंख्या कुल आबादी का १६ प्रतिशत है। पूरी दुनिया में उपलब्ध पानी का केवल तीन प्रतिशत पानी ही हमारे पीने के लायक है जिसमें से करीब ७० प्रतिशत ग्लेशियर यानी बर्फ व जमीनी जल के रूप में उपलब्ध है यानि पीने लायक पानी सिर्फ एक प्रतिशत से भी कम ही है।

भोजन के बिना कई महीनों जीवित रहा जा सकता है परन्तु पानी के बिना नहीं। आधुनिकरण की ओर अग्रसर सभ्यता व बढ़ती जनसंख्या के कारण जंगल कम होते जा रहे हैं। बढ़ते प्रदूषण, घटते जंगल व मशीनीकरण से प्रदूषण व तापमान बढ रहा है। परिणामस्वरुप जलवायु परिवर्तन हो रहा है जिसके कारण वर्षा कम हो रही है तथा नदियों में जल घटता जा रहा है। फिर भी नदियों में कूड़ा–कर्कट, गन्दगी व जहरीला कचरा डाला जा रहा है। जल आपूर्ति के लिए नलकूपों द्वारा अधिक भू–जल दोहन के कारण भू जल स्तर गिरता जा रहा है। प्रतिदिन आने वाले भूकम्प के कारणों में अति भूजल दोहन भी एक कारण है। देश के ५७२३ जल ब्लाकों में से ५० प्रतिशत से अधिक डार्क जोन में जा चुके हैं और शेष तेजी से डार्क जोन में होते जा रहे है। भारत सहित पूरे विश्व में घोर पेय जल संकट उत्तपन हो रहा है और प्राणी का जीवन खतरे में पड़ रहा है। पानी बार्बाद न करने का संकल्प करें। वर्षा जल संग्रहण, वाटर हारवैस्टिंग व रिचार्जर के द्वारा पानी की कमी को कुछ कम किया जा सकता है। खेती में फव्वारा सिंचाई पद्धति का प्रयोग करें तथा अधिक पानी खपत वाली ऊपज धान व गन्ना के बजाय तैलीय व दलहन की खेती करें तथा तम्बाकू की खेती बिलकुल न करें। हम सब मिलकर सुरक्षित भविष्य के लिए इस दिशा में

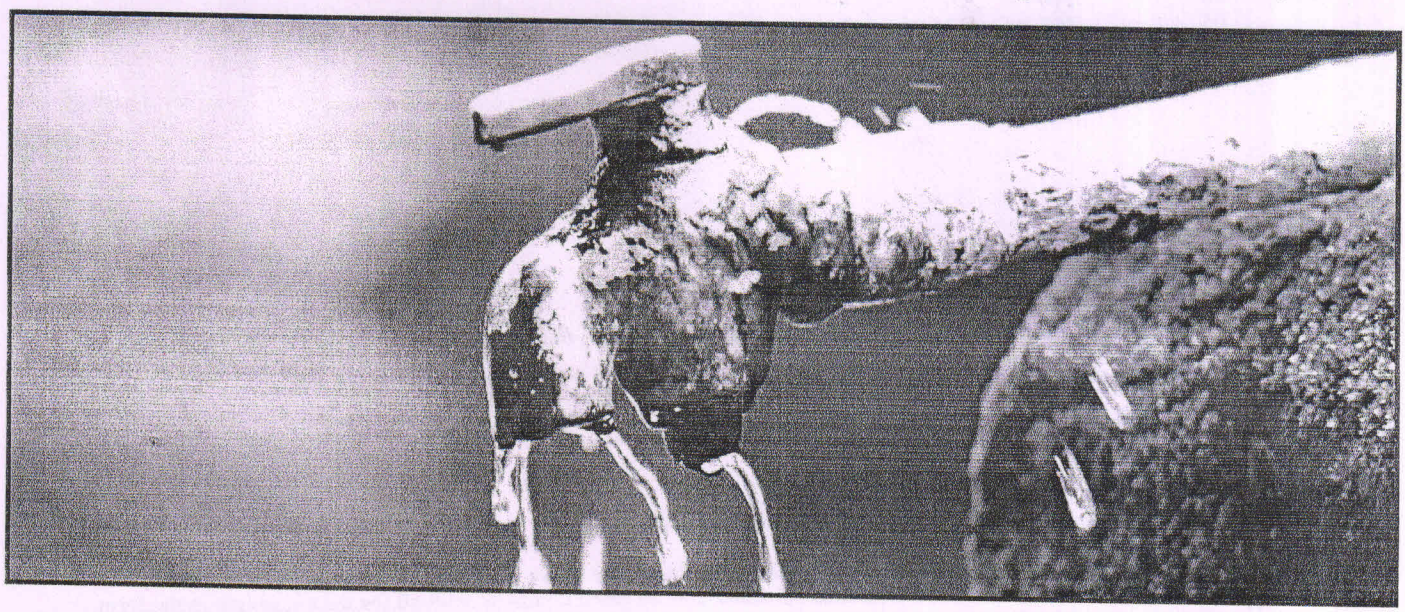

संकल्प और प्रयास करें।

सोचिये इस पानी की कमी के बारे में। जरा सोचिए हम क्या करते हैं सर्वे बताता है कि १० प्रतिशत से अधिक घरों में पानी के नल लीक करते है एक नल आपके घर में एक वर्ष में करीब ३०० गैलन पानी बरबाद करता है। ५ मिनट, जी हां ५ मिनट, का एक फव्वारा एक आदमी के लिए एक दिन की जरूरत पूरी कर सकता है। समान्य जन समझता है कि समुद्र भरे पड़े हैं और धरातल पर जब ७१ प्रतिशत पानी है तो जल की कमी की बात निरर्थक है जबकि वास्तविकता यह है कि हमारे लिए जीवन रक्षक जल कुल उपलब्ध जल के १ प्रतिशत से भी कम है। हमारे शरीर में भी ७५ प्रतिशत पानी है, फिर भी बिना पानी जीवत रतना सम्भव नहीं है।

चूंकि पानी किसी मिल या फैक्ट्री में नही बनाया जा सकता इसलिए इसका एक मात्र हल है जल संरक्षण व मितव्यता से प्रयोग। एक छोटा सा संकल्प कि पानी बिल्कुल भी बेकार नहीं करेंगे। बूंद बूंद बचायेंगे तथा जल संग्रहण में सहयोग करेंगे, से हमारी आने वाली भयकर स्थिति टल सकती है। मुझे क्या के बजाय मैं क्या सहयोग कर सकता हूं की नीति अपनाएं। तम्बाखू, गन्ने व चावल की खेती में बहुत अधिक पानी प्रतिदन खर्च होता है पर क्या हम इसे रोक सकते हैं, शायद नहीं क्योंकि हजारों एकड़ जमीन पर खेती तो होगी ही। सोचिये इस कमी को कम करने में हम क्या ओर कैसे कर सकते कर सकते हैं। बूंद बूंद से घट भरता है। सबके थोड़े थोड़े प्रयास से काम आसान हो जाता है और अन्त में आप सब को एक कहानी सुनाता हूं –– एक बार एक जंगल में आग लग गई। सभी जानवर अपनी जान बचाकर इधर उधर भागने लगे लेकिन एक नन्ही चिड़िया घबराई नहीं। उसने आग से लड़ने का फैसला किया और पास के तालाब से चोंच में पानी ला ला कर आग पर डालने लगी। एक बन्दर ने ये सब देखा तो चिड़िया से बोला मेरी भोली बहन तुम्हारे इस थोड़े से पानी से आग नहीं बुझने वाली। तो चिड़िया बोली बन्दर भाई यह तो मैं भी जानती हूं परन्तु मैं नहीं चाहती की जब इतिहास लिखा जाए तो मेरा नाम भागने वालों में शामिल हो। चिड़िया की बात सुन कर सब जानवर जाग गए और अपने अपने सामर्थ्य अनुसार पानी लाकर आग पर डालने लगे, कुछ दिन बाद आग बुझ गई। यानी हम सबको भी अपना कर्तव्य निभाना है और कहना है ...

हम सब मिल संकल्प करेंगे, पानी कभी न नष्ट करेंगे।
हम सुधरेंगे जग सुधरेगा, बूंद.बूंद से घड़ा भरेगा।
सोचें जल बर्बादी का हल, ताकि न आए संकट का कल।
जन जन हमें जगाना होगा, जल सब तरह बचाना होगा।

Subscribe TreeTake

It is our pleasure to inform you that our monthly bilingual colour magazine on environment **'Tree Take'**-- that is fully committed to serving Mother Nature-- is an upcoming national level venture that is being well received by both mass and class. Our approach is positive, pro-active and interactive. Our mission is to not only aware the common man of the not so common concerns of environment but to make him/her realize that it is only when people make joint efforts with the governments that sustainable development can be achieved and we can at least 'arrest' further degradation to flora and fauna. We wish to point out that the magazine is an effort aimed not at just fault-finding but arriving at solutions to problems we face in today's day and age. It is a well devised, well-circulated, judiciously promoted and constantly growing endeavor. It is also an interesting read for both the mass & the class-- educating as well as entertaining, involving as well as interactive. There are various sections for which you all can send write-ups too.

We request you to subscribe our magazine. Our monthly subscription charge is Rs 40. For yearly or half-yearly subscriptions, we give a 10% discount. Please support our venture and oblige. **Team TreeTake**

TreeTake Magazine Subscription Form

Period (months)	Price.	You Save.	Your Pick
12	432	48	----------
09	324	36	----------
06	216	24	----------
03	108	12	----------

I, _____, agree to subscribe Tree Take for a period of _____ months, w.e.f _____. My postal address is _____

_____ PIN _____

Email _____

Telephone/ Mobile: _____

Office/ Institution: _____

Please send me ___ copy/copies of the monthly magazine by post on the abovementioned address. I will make the payment on monthly basis (_____)/ (or) in advance by issuing a cheque for the subscription period (_____) in favour of TreeTake (cheque no. _____).

Signature & stamp (if it is an organisation/ institution) of subscriber:

Send the duly filled form to: Archana Misra, Managing Editor, TreeTake, 205, Rajendra Nagar, Lucknow (UP)-226004. You can also subscribe our magazine by sending us an email complete with all the details sought in the form. The email id for subscription is: treetakemagazine@gmail.com.

प्रकाश सिंह बादल और हरियाणा

पंजाब के मुख्यमन्त्री एवं वयोवृद्ध अकाली दल सुप्रीमो प्रकाश सिंह बादल का हरियाणा में भी बहुत सम्मान है। पंजाब में निरन्तर उनका भारतीय जनता पार्टी से राजनैतिक गठबन्धन है और इसी कारण वे सत्ता सुख भोग रहे हैं। हरियाणा के चौटाला परिवार से उनकी मित्रता व भाईचारा जगजाहिर है और वे समय-समय पर इनेलो का भारतीय जनता पार्टी से गठबन्धन कराते रहे हैं या प्रयास करते रहते हैं। उन्होंने 2014 के लोकसभा चुनाव में भी चुनाव पूर्व गठबन्धन का प्रयास किया था और अभी भी वे अपेक्षा और विश्वास करते हैं कि चुनाव के बाद इनेलो को एनडीए में सम्मिलित करा लेंगे। इनेलो ने भी मोदी सरकार को बिना शर्त समर्थन का भरपूर प्रचार कर लाभ उठाने का प्रयास किया परन्तु गोहाना रैली में नरेन्द्र मोदी द्वारा यह स्पष्ट अपील करना कि हमारे प्रत्याशियों को हराने का प्रयास करने वालों से सावधान रहें और उनकी ऐनक (इनेलो के चुनाव चिन्ह) से न देखें, अभय चोटाला ने मोदी व भाजपा पर प्रत्यक्ष प्रहार आरम्भ किए जिन पर पुनः विराम लग गया था क्योंकि बादल साहब ने अपना प्रयास जारी रखा हुआ है परन्तु झज्झर रैली में मोदी ने पुनः स्थिति स्पष्ट करते हुए भाजपा प्रत्याशियों को ही विजयी बनाने की अपील की। 16 मई को परिणाम आ चुके हैं जिसके अनुसार भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिल चुका है। हरियाणा में भाजपा को 10 में से 7, इनेलो को 2 और कांग्रेस 1 सीट पर विजयी रही है। बादल साहब ने 8 अप्रैल को हरियाणा में आयोजित जन सभाओं में चौटाला परिवार की प्रशंसा, मित्रता की दुहाई व चौटाला परिवार के लिए जान कुर्बान करने को तैयार रहने की बात कहते हुए इनेलो प्रत्याशियों को विजयी बनाने की अपील की। यहां तक तो ठीक है परन्तु उनका यह कहना कि उन्हें हरियाणा तथा हरियाणा वासियों से प्यार व लगाव है, पूर्ण रूपेण हास्यास्पद है। पानी बंटवारे के लिए हरियाणा का पंजाब से विवाद माननीय उच्चतम न्यायालय तक चल रहा है। बादल साहब जब भी पानी पर बोलते हैं तो केवल यही कहते हैं कि हरियाणा को एक बूंद पानी भी नहीं देंगे। हरियाणा की जनता क्या यह भूल पाएगी कि कुछ वर्ष पूर्व ही जब उच्चतम न्यायालय ने पानी बंटवारे पर हरियाणा के हक में निर्णय दिया था तो कांग्रेस सरकार ने पंजाब विधानसभा में उस निर्णय को निरस्त करने सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किया था और बादल (अकाली) दल द्वारा उसमें सहमति व्यक्त करते हुए उस प्रस्ताव को शत। प्रतिशत मतों से पारित करवा कर उच्चतम न्यायालय के निर्णय को निरस्त करते हुए हरियाणा के पानी पर मिलने वाले कानूनी हक को समाप्त कर दिया था। बादल साहब हरियाणा व हरियाणा वासियों से कैसा और कैसे प्यार करते हैं, यह एक ज्वलंत प्रश्न है। सैकड़ों एकड़ भूमि में हरियाणा में उनका फार्म हाउस उनको अवश्य हरियाणा से प्यार करवाता होगा और शायद इसी भाव से वे हरियाणा-पंजाब को एक मां के दो बेटे कहते हैं और वह भी चुनाव के समय तथा केवल और केवल चौटाला परिवार के हित के लिए वरना पानी के मामले में जैसी भाषा व शब्दावली बादल साहब प्रयोग करते हैं उससे एक मां के दो बेटों वाली नहीं बल्कि भारत-पाक विवाद जैसी बू आती है। कहीं से भी यह नहीं लगता कि बादल साहब हरियाणा को भारत देश का हिस्सा भी मानते हैं। ऐसे अवसर आए हैं जब पंजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाश सिंह बादल थे और हरियाणा की बागडोर चौटाला साहब के हाथ थी परन्तु बादल साहब ने पानी मसले पर चौटाला साहब की कभी नही सुनी।

रमेश गोयल
(लेखक जल बचत अभियान संचालक, जल चालीसा रचयिता और जल स्टार अवार्डी है।)

अप्रैल 2014

जल विवाद पर स्पष्ट मत

पावन संसार

नई दिल्ली, 26 जनवरी से 01 फरवरी 2016 सामाजिक/रचन

कागज बचाओ--पेड़ बचेगा

भारतवर्ष मे लगभग सभी कार्यालयों, विशेषकर न्यायालयों व उच्चाधिकारियों को भेजे जाने वाले पत्र–रिपोर्ट आदि कागज के एक ओर ही टाईप/प्रिन्ट की जाती है और दूसरी साईड़ अधिकतर खाली ही रहती है। भारत विकास परिषद् के राष्ट्रीय मन्त्री पयार्वरण रमेश गोयल ने प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी व उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री टी एस ठाकुर को पत्र लिखकर मांग की है कि केन्द्र व राज्यों के सभी कार्यालयों व सभी स्तर के न्यायालयों को आदेश/निर्देश जारी करें कि कागज के दोनों ओर टाइप/प्रिन्ट किया जाये। उन्होंने लिखा है कि दुनिया भर में 40 प्रतिशत वृक्ष केवल कागज बनाने के लिए काट डाले जाते हैं। बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए वृक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है और कम कागज का प्रयोग करके हम पेड़ बचाने में अपना सहयोग कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षक वर्ग से भी अपील की है कि वे विद्यार्थियों को कागज कम प्रयोग करने व बर्बाद न करने के लिए प्रेरित करें। अक्सर स्कूलों में हर सत्र में बच्चों को नई

रमेश गोयल
बीएम–19, शालीमार बाग

कापियां लगाने के लिए मजबूर किया जाता है जबकि पुरानी कापियां काफ़ी खाली होती हैं जो रद्दी में बेच दी जाती हैं, उनके खाली कागज प्रयोग करना सिखायें। लगभग हर वर्ष अनेक स्कूलों द्वारा हर सत्र में किताबें बदल दी जाती है इससे पुरानी किताबे बेकार हो जाती है और नई किताबें खरीदने में अभिभावकों का धन तो बर्बाद होता ही है साथ ही कागज खपत से पर्यावरण को भी बहुत हानि होती है। एक अनुमान अनुसार 6 पेड़ो से बने कागजों का प्रयोग एक परिवार वर्ष भर में करता है। 9 लाख टन से अधिक कागज विद्यार्थियों द्वारा वर्ष भर में प्रयोग किया जाता है जबकि पेड़ लगाते कितने लोग हैं। श्री गोयल ने विद्यार्थियों, कर्मचारियों, व्यवसायियों तथा उन सभी लोगों से, जो कागज का प्रयोग निरन्तर करते हैं, से कागज का प्रयोग दोनों ओर से करने व रफ काम के लिए साफ कागज का प्रयोग न करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि किसी कारण से प्रिन्ट रद्द होने पर कागज की दूसरी साईड को रफ कागज के रूप में प्रयोग करें। उल्लेखनीय है किं श्री गोयल विद्यार्थी जीवन से ही इसका पालन कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आयकर व्यवसायी होने के नाते उनके कार्यालय में बहुत कागज रफ कार्य के लिए प्रयोग होता है और वे पुरानी फाईलों में बेकार हो चुके कागजों की साफ साईड हमेशा रफ कागज के रूप में प्रयोग करते हैं। उन्होंने कभी रफ कापी नहीं खरीदी और ना ही अपने बच्चों को खरीद कर दी। सरकारी गजट व फार्मों में एक ओर खाली आने वाले कागजों की रफ कापियां बना कर ही प्रयोग किया। उन्होंने लिखा है कि कागज बचाने से पेड़ तो बचेगा ही धन भी बचेगा जो अन्य विकास कार्यों में प्रयोग किया जा सकेगा। जल चालीसा के रचियता श्री गोयल समर्पित भाव से कार्य करने वाले प्रतिष्ठित समाजसेवी हैं और पर्यावरणविद् होने के नाते पौधारोपण, स्वच्छता, प्रदूषण रोकथाम, जल–ऊर्जा बचत आदि पर सरकार व जनता का ध्यान आकर्शित करते रहते हैं। उनके इन्हीं जागरुकता व राष्ट्रीय कार्यों के लिए अनेक संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित भी किया है।

कागज बचाओ-पेड़ बचेगा

पल पल न्यूज: सिरसा, 22 जनवरी। भारतवर्ष में लगभग सभी कार्यालयों, विषेशकर न्यायालयों व उच्चाधिकारियों को भेजे जाने वाले पत्र-रिपोर्ट आदि कागज के एक ओर ही टाइप/प्रिन्ट की जाती है और दूसरी साइड अधिकतर खाली ही रहती है। भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय मन्त्री पर्यावरण रमेश गोयल ने प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी व उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश टीएस ठाकुर को पत्र लिखकर मांग की है कि केन्द्र व राज्यों के सभी कार्यालयों व सभी स्तर के न्यायालयों को आदेश/निर्देश जारी करें कि कागज के दोनों ओर टाइप/प्रिन्ट किया जाये। उन्होंने लिखा है कि दुनिया भर में 40 प्रतिशत वृक्ष केवल कागज बनाने के लिए काट डाले जाते हैं। बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए वृक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है और कम कागज का प्रयोग करके हम पेड़ बचाने में अपना सहयोग कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षक वर्ग से भी अपील की है कि वे विद्यार्थियों को कागज कम प्रयोग करने व बर्बाद न करने के लिए प्रेरित करें। अक्सर स्कूलों में हर सत्र में बच्चों को नई कॉपियां लगाने के लिए मजबूर किया जाता है जबकि पुरानी कॉपियां काफी खाली होती हैं जो रद्दी में बेच दी जाती हैं। उनके खाली कागज प्रयोग करना सिखायें। लगभग हर वर्ष अनेक स्कूलों द्वारा हर सत्र में किताबें बदल दी जाती हैं इससे पुरानी किताबें बेकार हो जाती हैं और नई किताबें खरीदने में अभिभावकों का धन तो बर्बाद होता ही है, साथ ही कागज खपत से पर्यावरण को भी बहुत हानि होती है। एक अनुमान अनुसार 6 पेड़ों से बने कागजों का प्रयोग एक परिवार वर्ष भर में करता है। 9 लाख टन से अधिक कागज विद्यार्थियों द्वारा वर्ष भर में प्रयोग किया जाता है जबकि पेड़ लगाते कितने लोग हैं?। गोयल ने विद्यार्थियों, कर्मचारियों, व्यवसायियों तथा उन सभी लोगों से, जो कागज का प्रयोग निरन्तर करते हैं, से कागज का प्रयोग दोनों ओर से करने व रफ काम के लिए साफ कागज का प्रयोग न करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि किसी कारण से प्रिन्ट रद्द होने पर कागज की दूसरी साइड को रफ कागज के रूप में प्रयोग करें। उल्लेखनीय है कि गोयल विद्यार्थी जीवन से ही इसका पालन कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आयकर व्यवसायी होने के नाते उनके कार्यालय में बहुत कागज रफ कार्य के लिए प्रयोग होता है और वे पुरानी फाइलों में बेकार हो चुके कागजों की साफ साइड हमेशा रफ कागज के रूप में प्रयोग करते हैं। उन्होंने कभी रफ कॉपी नहीं खरीदी और ना ही अपने बच्चों को खरीद कर दी। सरकारी गजट व फार्मों में एक ओर खाली आने वाले कागजों की रफ कापियां बना कर ही प्रयोग किया। उन्होंने लिखा है कि कागज बचाने से पेड़ तो बचेगा ही धन भी बचेगा जो अन्य विकास कार्यों में प्रयोग किया जा सकेगा। जल चालीसा के रचियता गोयल समर्पित भाव से कार्य करने वाले प्रतिष्ठित समाजसेवी हैं और पर्यावरणविद होने के नाते पौधारोपण, स्वच्छता, प्रदूषण रोकथाम, जल-ऊर्जा बचत आदि पर सरकार व जनता का ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। उनके इन्हीं जागरुकता व राष्ट्रीय कार्यों के लिए अनेक संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित भी किया है।

विश्व जल दिवस

जल कैसे

'जल ही जीवन है','जल है तो कल है' जैसी लोकोक्तियां-नारे हम प्रतिदिन पढ़ते-सुनते हैं परन्तु इनकी गम्भीरता की ओर कभी कोई ध्यान नहीं देते। जल प्रकृति की देन है और कुल धरातल के लगभग 71 प्रतिशत भाग में जल है परन्तु जल वैज्ञानिकों के अनुसार कुल उपलब्ध पानी का एक प्रतिशत से भी कम पानी ही पीने योग्य व जीवनरक्षक है तथा शेष पानी खारा व गंदा है। पानी की महत्ता वास्तव में उस समय पता चलती है जब हमें बहुत प्यास लगी हो और पीने का पानी आसपास उपलब्ध न हो। तब हम दो बूंद पानी के लिए ही छटपटाने लगते हैं और ऐसा लगता है कि यदि तुरन्त पानी न मिला तो हमारे प्राण संकट में पड़ जाएंगे। जीवन रक्षक अमूल्य पेयजल को हम प्रतिदिन बड़ी निदर्यता व लापरवाही से प्रातः उठने से रात्रि सोने तक बर्बाद करते हैं। अलग अलग परिवार, व्यक्त, स्थान के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं परन्तु पानी बर्बादी के कुछ सामान्य कारणों में से कुछ यहां प्रस्तुत हैं:-

1. हाथ धोने के लिए खोली गई टूंटी को तब तक बंद नहीं किया जाता, जब तक हाथ पर साबुन लगाकर उसे अच्छी तरह से मल न लें, तब तक टूंटी का पानी नाली में बहता रहता है जिसका कोई उपयोग नहीं हुआ वह बर्बाद हो गया। इसलिए हाथ गीला करके टूंटी बंद कर दें और साबुन लगाने व मलने के बाद ही पुनः टूंटी खोलें। हर शहर गांव में इसी से प्रतिदिन लाखों, करोड़ों लीटर पानी बचने लगेगा।

2. दंत मंजन-पेस्ट करते समय ब्रुश गीला करने के लिए टूंटी खोलते हैं जो कुल्ला करने बाद ही बंद की जाती हैं और तब तक पानी व्यर्थ बहता रहता है। प्रतिदिन हम इस प्रकार बहुत पानी बर्बाद करते हैं। ब्रुश गीला करने के बाद टूंटी बंद कर दें।

3. कुछ सज्जन पुरूष शेव करते समय ब्रुश भिगोकर टूंटी बंद करने में कष्ट मानते हैं और शेव करने के बाद ब्रुश आदि धोकर ही टूंटी बंद करते हैं यानि प्रतिदिन 8-10 मिनट या अधिक टूंटी को बेकार चलाए रखते हैं। मंजन-पेस्ट व शेव करते समय हमेशा मग में पानी लेकर प्रयोग करें, इसी से प्रतिदिन लाखों लीटर पानी बचने लगेगा।

4. स्नानघर में बाल्टी टूंटी में खोलकर नहाने लगते हैं और साबुन लगाते व शरीर मलते समय बाल्टी भरने पर पानी नाली में बहता रहता है और हम टूंटी बंद नहीं करते। नहाने में केवल एक-दो बाल्टी ही काम लेते हैं परन्तु नाली में 5-10 बाल्टी पानी व्यर्थ चला जाता है। थोड़ा सा ध्यान रखकर बहुत पानी बर्बाद होने से बचाया जा सकता है। टूंटी के नीचे बैठकर कभी न नहायें ।

5. बर्तन साफकरते समय खोली गई टूंटी अंत तक चलती रहती है, जबकि बर्तनों पर साबुन/पाउडर लगाते समय पानी की आवश्यकता नहीं होती। टब में बर्तन साफ करते हुए भी टूंटी निरन्तर व बिना आवश्यकता नहीं चलानी चाहिए। स्वयं भी ध्यान रखें तथा अपने नौकर व कामवाली को भी पानी का महत्व समझाएं।

6. कपड़े मशीन में धोने के बाद बाल्टी में खंगालने के स्थान पर मशीन में सीधे पाईप लगाकर खंगालने से 20-30 बाल्टी पानी अधिक खर्च होता है। कपड़े बाल्टी में ही खंगालें। ऐसी स्वचालित मशीनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिनमें बहुत अधिक पानी खर्च होता हो।

6. कपड़े अधिक समय पहनकर आवश्यकता अनुसार ही धोने चाहिएं।

7. घरों में पानी की टंकी भरने के लिए मोटर चलाई जाती है और टंकी भर जाने के बाद पानी बाहर व्यर्थ बहता रहता है और पता नहीं चलता कि कितना पानी व्यर्थ बह गया। यदि उस पानी की निकासी सीवर में न हो तो पानी गली बाजार में इकठा हो जाता है जो कभी कभी पड़ोसियों से लड़ाई का कारण भी बनता है। पानी की टंकी भरने के बाद ओवरफ्लो रोकने के लिए टंकी में गुबारा लगाया जाता था परन्तु अब हर घर में मोटर लगी है और पानी की टंकी ओवरफ्लो होने से बहुत पानी बर्बाद होता है। टंकी भरने की जानकारी के लिए एक अलार्म ''वाटर बैल'' लगवाएं जिसकी कीमत मात्र 100-120 रूपये ही है। टंकी भरने के बाद वाटर बैल बोलेगी- सावधान! पानी की टंकी भर गई है, कृपया मोटर बन्द कर दें। निश्चिंतता और जल बर्बादी रोकने के लिए वाटर बैल अवश्य लगवाएं । पानी के साथ साथ बिजली भी बचेगी और धन भी।

8. गर्मी के मौसम में मध्यम वर्गीय परिवारों में कूलर का बड़ा सहारा रहता है। कूलर में पानी भरने के लिए आम तौर पर पाईप लगाकर भूल जाते हैं या हम अन्य कामों में लग जाते हैं और कूलर भर जाने के बाद पानी फर्श पर गिर कर नाली में बहता रहता है और एक बार में ही 20-30 लीटर और कई बार तो सैंकड़ों लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। जरा सोचिए इस प्रकार कितना पानी बर्बाद होता है।

9. कार, स्कूटर, साईकिल या अन्य वाहन पाईप लगाकर धोते समय पानी बहता रहता है। दिल्ली सरकार ने पाईप से वाहन धोने पर जुर्माने का प्रावधान कर दिया है । कपड़ा गीला करके भी इसे साफ किया जा सकता है। वाहन पाईप लगाकर न धोयें।

10. पशुओं को नहलाने के लिए जोहड़ का ही प्रयोग करें। यदि घर पर ही पशु नहलाना हो तो पाईप लगाकर नहीं बल्कि बाल्टी में पानी लेकर मग से नहलाएं। पीने के पानी से पशु को नहीं नहलाना चाहिए। सम्भव हो तो पशु खेत या बगीचे में नहलायें ताकि उस पानी का उपयोग सिंचाई के लिए हो जाये। सावधानी से लाखों लीटर पानी हर मास बच जायेगा।

11. पाईप लगाकर फर्श धोते समय बहुत पानी बर्बाद होता है। झाड़ू लगाकर पोचे से फर्श साफ करना चाहिए। गर्मी में कई स्थानों पर आन्धी के कारण फर्श पर मिट्टी -रेत इकठी हो जाती है उसे भी झाड़ू से साफकरें। यदि फर्श धोना अनिवार्य है तो पाईप की बजाए बाल्टी व मग से धोएं इससे पानी की खपत कम होगी।

12 बहुत लोगों को (विशेषकर गांव कस्बों व छोटे शहरों में) छिड़काव करने की आदत होती है। घर दुकान के आगे

पक्की सड़क होने पर भी प्रतिदिन छिड़काव अवश्य करते हैं। वे यह नहीं जानते कि लुक से बनी सड़क पर पानी डालने से सड़क जल्दी टूट जाती है। अनावश्यक छिड़काव करके पानी बर्बाद न करें।

13. मिट्टी से भरी वस्तु को धोने में पानी बहुत लगता है। उसे पहले झाड़ पोंछ कर फिर गीले कपड़े से साफ करना चाहिए या मग से पानी डालकर धोना चाहिए।

14. बर्तन कम से कम प्रयोग करने चाहिएं ताकि उन्हें साफकरने में कम पानी प्रयुक्त हो। यदि पोंछने से काम चलता हो तो धोना नहीं चाहिए।

15. पीने के पानी वाले घड़े या कैम्पर को साफ करते समय उसमें जो पानी होता है उसे नाली में न डालकर बाल्टी में निकालें और आवश्यकता अनुसार प्रयोग करें। घड़ा आदि धोने में भी अधिक पानी न बहाएं। प्रतिदिन पानी बदलना भी आवष्यक नहीं है।

16. फ्लश पानी बर्बादी का बहुत बड़ा कारण है और घर के कुल पानी खर्च का कम से कम 30 प्रतिशत फ्लष में जाता है। इस पानी खर्च को कम करने के लिए सिस्टर्न में दो लिटर की एक प्लास्टिक बोतल या पोलिथीन में लपेट कर एर्क इंट रखी जा सकती है जो पानी की खपत को कम कर देगी। सिस्टर्न में लगे गुबारे को यदि कुछ नीचे सैट कर दिया जाए तो भी पानी की खपत कम हो जाएगी और इस प्रकार लाखों लिटर पानी बचाया जा सकता है।

17. गर्मी बढ़ने के साथ साथ घर दफ्तर में लगे ए.सी. की सर्विस का काम जोर शोर से चलता है जिसमें पानी की बहुत

विश्व जल दिवस 2016

ा बचाएं?

खपत होती है। यदि आप थोड़ा सा ध्यान दें और ए.सी. को पानी से धोने से पहले यदि उसे किसी कपड़े या ब्रुश से झड़वा लें तो निश्चित रूप से हजारों लाखों ए सी सर्विस में कम पानी खर्च करके लाखों लीटर पानी बचाया जा सकेगा। एसी सर्विस करने वाले मिस्त्री कृपया विशेष ध्यान रखें। हवा व कम पानी से सफाई की एक मशीन भी एसी सर्विस करने वाले मिस्त्री रख सकते हैं।

18 .बढ़ता तापमान, सुखे नल तथा बिजली की कमी जनता को जाम व प्रदर्शन के लिए मजबूर करता है। यदि हम पानी को बर्बाद नहीं करेंगे और उसका सदुपयोग करेंगे तो केवल पानी की समस्या ही कम नहीं होगी बल्कि बिजली की कमी भी दूर होगी। पानी को साफकरने तथा हमारे तक पहुंचाने में बिजली की बड़ी मोटरें चलती हैं और घरों में टंकी भरने के लिए भी मोटरें चलाई जाती हैं जिसमें काफी मात्रा में बिजली की खपत होती है। यदि हम पानी बचायेंगे तो मोटरें कम चलेंगी और बिजली बचेगी जिससे हमें अधिक समय तक बिजली मिल पायेगी। पानी बचेगा बिजली बचेगी । बिजली बचेगी धन बचेगा।

19. तम्बाकु की खेती अधिक पानी की खपत वाली है और तम्बाकु से बनने वाले बीड़ी, सिगरेट, गुटका आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इसी प्रकार गन्ने की खेती के लिए भी बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। गन्ने से बनी चीनी मोटापे व अन्य बिमारियों को निमंत्रण देती है। सरकार को इन दोनों फसलों पर नियंत्रण करना चाहिए जिससे बिमारियों से छुटकारा मिलेगा तथा हस्पतालों में होने वाला खर्च घटेगा और पानी की बड़ी मात्रा में बचत होगी।

20. धान की खेती भी अधिक पानी की खपत वाली है। टीलडा राईसलैंड प्रा. लि. गुड़गांव का कृषि प्रोत्साहन विंग ने विश्व बैंक की मदद से कुरूक्षेत्र से 13 किमी जिरबारी गांव में बासमती जल संरक्षण प्राजैक्ट आरम्भ किया है। बासमती की फसल मुख्यतः हरियाणा में होने के कारण भूजल स्तर अधिक गिर रहा है इसलिए जल संरक्षण अति महत्वपूर्ण व आवश्यक है। तकनीकी जानकारी व सिस्टम को सम्बन्धित कृषक, विशेषकर जहां धान की खेती होती है, समझकर इसको अपने क्षेत्र में भी लगवाएं। यह सरकारी योजना है। भविष्य को सुरक्षित करने के लिए इसे आरम्भ कराने के लिए प्रयास करें ।

मशीन द्वारा धान की सीधी बिजाई कारगर है और इससे न केवल पानी की बचत होती है बल्कि कम मेहनत, कम खर्च व कम समय में अच्छी फसल होती है। हरियाणा कृषि विभाग इसमें मार्गदर्शन व सहयोग कर रहा है और इसकी प्लांटिंग के लिए मशीन विभाग की ओर से उपलब्ध कराई जा रही है। इससे फसल की क्वालिटी भी अच्छी रहेगी यानि आम के आम और गुठलियों के दाम वाला लाभ मिलेगा। धान की सीधी बिजाई ही करें तथा जल, समय व धन की बचत करते हुए अधिक फसल प्राप्त करें।

21. मांस साफ करने के लिए अरबों लीटर पानी मासिक खर्च होता है। अधिक मांस प्राप्त करने के लिए गाय व सुअर को अधिक अनाज खिलाया जाता है जिसके कारण बहुत बड़ी मात्रा में अनाज भी बर्बाद किया जा रहा है। भारत में हजारों कत्लगाहों में इसी प्रकार वर्ष भर में अरबों लीटर पानी बर्बाद किया जाता है। मांसाहार छोड.कर शाकाहार अपनाएं। जीव बचेगा, अन्न बचेगा और जल बचेगा।

22. निश्चित रूप से होली रंगों का त्योहार है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम कैमिकल युक्त व गन्दे रंगों का प्रयोग करके वातावरण को दूषित करें तथा चर्म व नेत्र रोगों को निमन्त्रण दें। समय के साथ साथ मान्यताएं व आवश्यकताएं भी बदलती रहती हैं। रंगों को लगाने में तो थोड़ा पानी प्रयोग होता हैं परन्तु रंग उतारने में बहुत पानी खर्च होता हैं जिसे हम तिलक होली यानी केवल गुलाल का तिलक मात्र लगाकर अपने प्यार व सम्मान का प्रदर्शन कर सकते हैं। इस प्रकार हर शहर गांव में लाखों लीटर पानी बर्बादी से बचाया जा सकता है और हम सब पानी की कमी की राष्ट्रीय समस्या को कम करने में सहयोगी हो सकते हैं।

23. सरकारी विभाग की लापरवाही भी पानी की कमी के लिए उत्तरदायी है। गत वर्ष मुम्बई में 120 किलोमीटर लम्बी पाईप लाईन में अनेक स्थानों पर दशकों लीकेज रहा है परन्तु नगर निगम अधिकारी इस विषय में अचेत रहे जबकि पानी की सप्लाई की मात्रा घटाने में हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे लापरवाह अधिकारियों का उत्तरदायित्व निश्चित होने पर भी सुधार की कुछ सम्भावना बढ़ेगी।

24, श्रावण मास और उसमें शिवरात्रि पर्व पर जल का विशेष महत्व है क्योंकि पूरे मास शिवजी का जलाभिषेक किया जाता है। पानी की कमी को ध्यान में रखते हुए शिवलिंग पर बाल्टियां भर भर कर नहीं बल्कि केवल लोटा भर जल ही चढ़ाएं। महादेव मनोभाव व श्रद्धा से ही प्रसन्न होते हैं, जल की अधिक मात्रा से नहीं। कविता की इन पंक्तियों को ध्यान में रखकर पूजा करें 'पूजा और पूजापा प्रभुवर इसी पूजारिन को समझें, दान दक्षिणा और न्यौछावर इसी भिखारिन को समझें'।

25. शिव आराधना करते हुए हम इन्द्रदेव तथा वरूणदेव का भी सम्मान करें यानी पानी बर्बाद न करें। मन्दिरों के प्रबन्धकों को वाटर हारवैस्टिंग या रिचार्जर लगवाने चाहिएं ताकि भक्तों द्वारा शिवलिंग पर चढाया गया जल नालियों में ना बहकर सीधा जमीन में चला जाये और भूजल स्तर सुधारने में सहायक हो।

26. पूर्व व्यवस्था पर नजर डालें तो लगभग सभी शिवालय तालाब के किनारे स्थित हैं। या यूं कहें कि शिवालय के पास तालाब बना है और शिव पर अर्पित दुध व जल उस तालाब में चला जाता है। इससे जल संरक्षण होता था व जल का अन्य उपयोग हो जाता था। दुध के कारण तालाब मे काई नहीं जमती थी और पानी गन्दा नही होता था। अब स्थिति बदल गई है। शिवालयों का पानी व दुध सिवर में जाता है जिससे जल अधिपति वरूणदेव का निरादर होता है और दुध भी व्यर्थ बह जाता है। शिवालय के साथ वाटर हारवैस्टिंग अवश्य बनवाएं ताकि पानी को संचित किया जा सके।

27. वर्षा के लिए जंगल का बहुत महत्व है। धरती पर एक शताब्दी पूर्व 40 प्रतिशत से अधिक जंगल था जो वर्तमान में लगभग 10 प्रतिशत रह गया है। हर वर्ष एक पौधा अवश्य लगाएं और वर्षा जल का मार्ग प्रशस्त बनाएं।

28. आम आदमी की अपेक्षा समर्थ और सक्षम लोगों के घरों में अधिक पानी बर्बाद होता है। यदि ऐसे लोग, बड़े अधिकारी व जन प्रतिनिधि देश की ज्वलंत समस्या पानी की कमी को दूर न कर सकें तो कम से कम उसे बढ़ाने का कारण तो न बनें। अपने घर में बर्बाद होने वाले पानी की ओर ध्यान दें।

29. हरियाणा सरकार ने शत प्रतिशत पेयजल कनैक्शन लगवाने वाली पंचायतों को 50 हजार रूपये पुरस्कार देने की घोषणा की है। इससे पानी की बर्बादी रूकेगी और नल अकारण नहीं। शीघ्र वाटर मीटर युक्त पानी कनेक्शन लगवाएं। सभी सरकारें ऐसा प्रोत्साहन दें तो जल बर्बादी घटेगी।

30. शौचालय के पानी को पीने योग्य बनाने वाली मशीनः लंदन नैनोप्रौद्योगिकी विशेषज्ञ मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के साराह हेग का कहना है कि एक नई मशीन बनाई गई है जो कि शौचालय के बेकार पानी को पीने योग्य बना सकती है। माइक्रोसाफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स की ओर से वित पोषित यह आविश्कार विकासशील देशों में लाखों लोगों का जीवन बदल सकता है। अनुसंधानकर्ताओं की योजना इस मशीन के नमूने को वर्ष 2013 तक प्रदर्शित करने की थी परन्तु सम्भव न हो सका। हालांकि मशीन से साफ होने वाला पानी मिनरल वाटर जैसा नहीं हो सकता लेकिन अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि परिणाम उन क्षेत्रों के लिए काफी मायने रखेंगे जहां स्वच्छ जल की भारी कमी है।

119

लुप्त होते तालाब

गांवों के तालाब न केवल वर्षा जल संग्रहण के मुख्य साधन थे बल्कि ग्रामीण जीवन का अंतरंग भाग थे जो बड़ी तीव्र गति से लगभग लुप्त हो गए। इन तालाबों का पानी पशुओं के पानी पीने व नहाने के ही काम नहीं आता था बल्कि अन्य कार्यों में भी प्रयुक्त होता था। पिछले कुछ दशकों में पूरे देश में दबंग, सम्पन्न व प्रभावशाली लोगों ने अधिकांश तालाबों में मिट्टी भर कर भवन व इमारतें निर्मित कर लिए। पानी की कमी का यह भी एक बड़ा कारण है। नगरों में या आसपास भी ऐसे तालाब थे जो वर्षा जल संग्रहण के लिए उपयोगी थे और अब उनके बन्द हो जाने के कारण ही अधिक वर्षा में पानी घरों में घुस जाता है और बाढ़ जैसी स्थिति बन जाती है। हर प्रान्त में बड़ी संख्या में मिलने वाले तालाबों की संख्या अब नगन्य हो गई है और इसमें सरकारी कर्मचारी, राजनेता व ग्राम सभा/पंचायत की भी बड़ी भूमिका है।

हमारे पूर्वज बहुत दूरदर्शी व भविष्य दृष्टा थे और बड़ी बुद्धिमता पूर्वक हर गांव के पास तालाब निर्मित कराये थे ताकि सूखा व पानी की कमी की स्थिति न आने पाए। पिछले कुछ वर्षों में तालाबों को अधिकारियों व ग्राम पंचायतों की मीली भगत से नाम मात्र राशि पर मछली व्यापारियों को ठेके पर देकर भी उनका अस्तित्व समाप्त किया है। इन तालाबों के किनारे सैकड़ों छायादार व फलदार वृक्ष होते थे जिन्हें काट कर अतिक्रमण करने वालों ने पर्यावरण को भी बहुत क्षति पहुंचाई है। वह राशि भी जन हित में खर्च होने की बजाय व्यक्तिगत हितों में लग गई। ये तालाब सदियों से हमारे परम्परागत जल संग्रहण स्रोत थे और जल की बढ़ती कमी व वर्षा जल संग्रहण को ध्यान में रखते हुए अब इन तालाबों पर किए गए अतिक्रमणों को हटा कर मूल रूप

में वापस लाना समय की मांग व आवश्यकता है। उन सब अतिक्रमणकारी व्यक्तियों, प्रशासनिक व पंचायत अधिकारियों/सदस्यों के विरूद्ध अपराधिक केस दर्ज करके कार्यवाही की जानी चाहिए क्योंकि अवैद्य निर्माण व अतिक्रमण को किसी भी रूप में रियायत नहीं दी जा सकती। अगस्त 2006 में एक केस में निर्णय देते हुए उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति एसबी सिन्हा व दलवीर भंडारी आधारित बैंच ने कहा था कि भारत सरकार व राज्य सरकारों का कर्तव्य है कि वह प्राकृतिक जल संसाधनों की रक्षा करे जिसके लिए वह संविधान की धारा 21 अनुसार बाध्य भी है। माननीय न्यायालय ने यह भी कहा कि प्राकृतिक जल संग्रहण स्रोत की न केवल रक्षा ही की जानी चाहिए बल्कि उनका दुरूपयोग रोककर उन्हें पुनः प्रयोग लायक बनाने के लिए आवश्यक कार्यवाही सभी सरकारों को करनी चाहिए। इसी प्रकार न्यायमूर्ति मार्कंडेय काटजू व ज्ञान सुधा मिश्रा आधारित बैंच अनुसार बहुत चिरकाल से गांवों में सांझी भूमि रही है जिन्हें ग्राम सभा भूमि, ग्राम पंचायत भूमि (उत्तरी राज्यों में), शामलात देह (पंजाब में), मंडावली व पौराम्बोक भूमि (दक्षिण भारत में), कलाम, मैदान आदि इनके उपयोग अनुसार कहा जाता रहा है। यह जन उपयोगी ग्रामीण भूमि सदियों से ग्रामिणों के उपयोगी कार्य जैसे पशुओं के पीने व नहाने के लिए तालाब, कृषि उपयोग के पानी संग्रहित करने, पशु चरने-विचरने के लिए मैदान, बच्चों के लिए खेल मैदान, सर्कस, रामलीला, बैलगाड़ी खड़ा करने, शमशान भूमि आदि के रूप में प्रयुक्त होती रही है। सामान्यतः इसे अपरिवर्तनीय व अहस्तांरित माना जाता रहा है। एक केस में उच्चत्तम न्यायालय ने कहा -यह सत्य है कि इस भूमि पर मालिकाना हक सरकार के पास है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि समाज के अधिकारों का सम्मान न करें। हमने यह नोट किया है कि स्वतंत्रता के समय से देश की इस सांझी भूमि को असामाजिक तत्वों ने बाहुबल, धन बल व राजनीतिक दबाब से अतिक्रमण कर लिया है। परिणाम स्वरूप कई राज्यों में ऐसी भूमि बिलकुल भी नहीं बची है, कागजों में बेशक वह शेष हो, और यह सब राज्य व स्थानीय अधिकारियों के प्रश्य व मीलि भगत से हुई है। सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को निर्देश दिया गया था कि राज्य के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से इन तालाबों का अतिक्रमण अविलम्ब हटवाया जाये। केवल किसी सरकारी निर्देश पर अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लोगों, भूमिहीन मजदूरों को आबंटित भूमि या जहां विद्यालय, डिस्पेंशनरी या अन्य जन उपयोगी कार्य चल रहे हों उनको छोड़ दिया जाये। किसी भी अनियमितता को किसी भी तरह नियमित नहीं किया जाना चाहिए और ग्राम सभा पंचायत की भूमि गांव वासियों के सांझे उपयोग के लिए उन्हें लोटाई जाये।

उच्चत्तम न्यायालय के बार-बार निर्देशों के बावजूद सरकारें कोई कार्यवाही नहीं कर रही हैं क्योंकि अतिक्रमणकारी राजनेता, राजप्रश्य प्राप्त दबंग, अधिकारी व प्रभावशाली व्यक्ति ही हैं। सन् 2025 तक हमारी जल खपत 1530 अरब घन मीटर हो जाएगी परन्तु वर्षा के बिना हमारे पास कोई दूसरी जल सम्पदा नहीं है। इसलिए वर्षा की एक एक बूंद को बचाना और धरती में रिचार्ज करना ही सबसे जरूरी कार्य हो जाता है और तालाब इसमें सर्वाधिक सहायक हैं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तत्कालिन न्यायमूर्ति शम्भुनाथ श्रीवास्तव ने इसका संज्ञान लेते हुए सरकार से जानकारी ली तब यह तथ्य सामने आया कि उत्तर प्रदेश में 1952 में 392000 हैक्टेयर भूमि में तालाब थे जिनमें से अब अधिकांश भवन, कल कारखाने या खेती में प्रयुक्त हो चूके हैं। जनसंख्या वृद्धि, दूषित वातावरण व वायुमंडल में परिवर्तनों के कारण जल स्रोत तेजी से सूख रहे हैं। भारत में इसका सर्वाधिक प्रभाव है और 97 बड़े जल भंडारों में मात्र 21 प्रतिशत जल मई 2016 में शेष था। इसलिए सभी सरकारों को वर्षा जल संग्रहण के प्राकृतिक स्रोतों तालाबों का पुनरुद्धार तुरन्त करना चाहिए।

रमेश गोयल,
पर्यावरणविद् व जल स्टार
बीएम-19 प, शालीमार बाग, देहली-110088
-9416049757

24/8/16 प्रकाशित

पेड़ लगाने से ही बच सकता है पर्यावरण

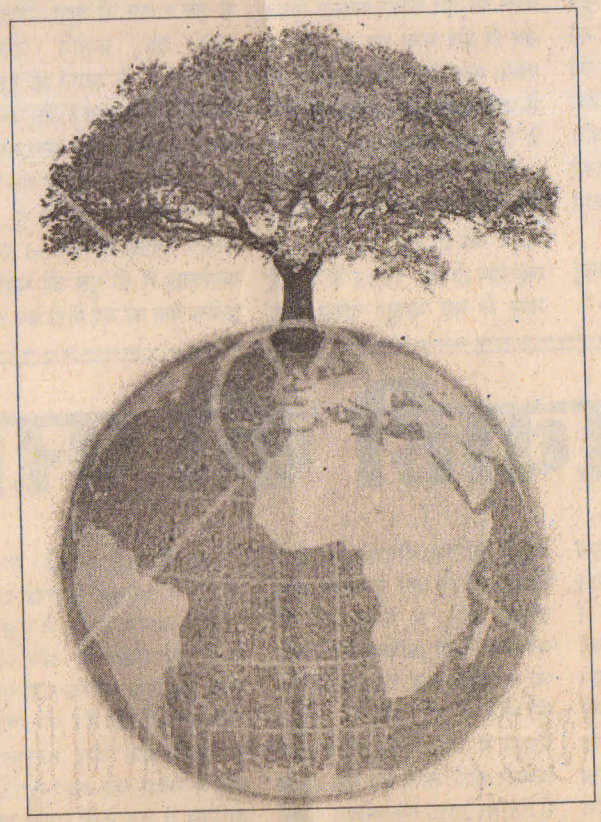

बढ़ते वैश्विक तापमान व प्रदूषण के कारण निरन्तर जलवायु परिवर्तन हो रहा है और इस चिंतनीय स्थिति तक पहुंच गया है कि दिसम्बर 2015 में फ्रांस में विश्व स्तर पर शिखर सम्मेलन हुआ है जिसमें हमारे प्रधान मन्त्री ने भी भाग लिया था और विश्व के सभी देशों ने इसे गम्भीर संकट मानते हुए मानवता व प्रकृति के बीच संतुलन बनाने के लिए आपस में कई समझौते भी किए हैं। सौर उर्जा का अधिक उपयोग भी इसमें सम्मिलित है। हमें स्वच्छ पर्यावरण, स्वच्छ उर्जा, स्वच्छ जल के अतिरिक्त अधिक हरियाली की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए कार्य करना होगा। प्रदूषण व निरन्तर कम होते जंगल के कारण 'पर्यावरण' सही रखना एक गम्भीर चुनौती बन गया है। विश्व भर में असमय हो रही अति वर्षा व बाढ़ भी जलवायु परिवर्तन का परिणाम है। वैश्विक तापमान व प्रदूषण पर अंकुश लगाने का वृक्षारोपण एक मात्र साधन है। विकास तथा आधुनिकता के नाम पर जंगल काटे जा रहे हैं। एक पेड़ 50 वर्ष में 17.50 लाख रूपये मूल्य की आक्सीजन देता है और पानी की रिसाइकलिंग अनुमानतः 41 लाख रूपये की बनती है। एक पेड़ हर वर्ष लगभग 3 किलो कार्बन डाईअक्साइड सोख लेता है जिसका वायु प्रदूषण नियन्त्रण खर्च अनुमान 35 लाख रूपये बैठता है। चीन कार्बन-डाय-ऑक्साइड के उत्सर्जन में 1 नम्बर पर है। इस सूची में संयुक्त अमेरिका का दूसरा स्थान है। चिंतनीय विषय है कि हर वर्ष लगभग 80 हज़ार एकड़ जंगल कम हो रहे हैं। लकड़ी बर्बाद न करें, हरे पेड़ न काटे तथा कागज बर्बाद न करें ताकि जंगल कम न हो। एक व्यक्ति पूरे जीवन में जितना प्रदूषण फैलाता है उसे शुद्ध करने में 300 वृक्षों की शक्ति लगती है। एक व्यक्ति एक दिन में जितनी आक्सीजन लेता है उससे 3 आक्सीजन सिलेण्डर भरे जा सकते हैं जिसकी अनुमानित लागत 2100 बनती है। इस प्रकार एक व्यक्ति (यदि औसत आयु 65 वर्ष मान लें) अपने जीवनकाल में 5 करोड़ रूपये से अधिक मूल्य की आक्सीजन प्रकृति से मुफ्त में प्राप्त करता है परन्तु बदले में प्रकृति को कुछ नहीं देता। कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाएं व प्रदूषण कम करने में सहयोग करें। वृक्ष लगाना आवश्यक है और लकड़ी व कागज का कम प्रयोग भी पेड़ कम कटने में सहायक हो सकते हैं। 6 पेड़ों से बने कागजों का इस्तेमाल एक परिवार साल भर करता है। अब सवाल यह है कि उस परिवार का प्रत्येक सदस्य साल भर में कितने पेड़ लगाता है? 40 प्रतिशत पेड़ दुनियाभर में केवल कागज बनाने के लिए काट डाले जाते हैं। अनुमानित 9 लाख टन कागज विद्यार्थियों द्वारा सालभर में इस्तेमाल किया जाता है। 200 वर्षों में जलवायु परिवर्तन इतनी तेजी से हुआ है कि प्राणी व वनस्पति जगत को इस बदलाव के साथ सामंजस्य बैठा पाने में बड़ी मुश्किल हो रही है। इस परिवर्तन के लिए काफी हद तक मानवीय क्रिया क्लाप ही जिम्मेवार है। 70 प्रतिशत वायु प्रदूषण वाहनों से निकलने वाले धुएं के कारण होता है। केवल दिल्ली में ही हर साल 5 लाख से ज्यादा वाहन बढ़ रहे हैं। अन्य शहरों का भी यही हाल है। विश्व स्वास्थय संगठन के अनुसार दूषित वायु के कारण हमारे देश में 24 लाख लोग हर साल मर रहे हैं। दिल्ली विश्व के सर्वाधिक प्रदूषण वाले नगरों की श्रेणी में है। प्रति वर्ष जंगल कटते जा रहे हैं और इसी कारण प्रदूषण बढ़ रहा है जो वैश्विक तापमान बढ़ाने व जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है। प्रकृति से प्यार करें। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करें। हर वर्ष एक पौधा अवश्य लगाएं और स्वच्छता, जल-उर्जा संरक्षण को अपनी आदत का भाग बनाएं।

आओ सुन्दर देश बनाएं,
जंगल बिना मेघ ना बरसें
हरे भरे हम वृक्ष लगाएं, लगे
पेड़ तो फिर क्यों तरसें
हर साथी इक पेड़ लगाए,
आज समय की यही पुकार
उमड़ घुमड़ कर वर्षा आए,
बच्चे दो और पेड़ हजार

हमारे लिए हमारी संस्कृति ही हमारी जड़ है और भारतीय संस्कृति की जड़ों में है वन, वृक्ष, पानी, भूमि यानि पूरी प्रकृति...। जड़ों के बगैर वृक्ष में बढ़ोतरी, प्रगति नहीं हो सकती। जड़ों से कटकर कोई वृक्ष जीवित ही नहीं रह सकता। हम वृक्षों को इसलिए उगाते हैं, ताकि हमें उनसे खाद्य की प्राप्ति हो। आरम्भ में अन्न, मनुष्य की खुराक नहीं थी। हम पशुपालक थे और पशुओं के साथ अपना जीवनयापन करते हुए फलों का सेवन करते थे। फिर धीरे धीरे घास के बीजों को पकाकर खाना शुरू किया गया और इस तरह मनुष्य ने अन्न की खेती करना और संग्रह करना शुरू किया, तभी से दुनिया में अधिकांश लड़ाइयां होने लगी। अब समय आ गया है, जब पुरी मनुष्य जाति को अपने भविष्य के बारे में नए सिरे से सोचना होगा। फिर प्रकृति की ओर लौटना होगा।

रमेश गोयल, राष्ट्रीय मन्त्री
पर्यावरण, भारत विकास
परिषद, सिरसा।

विश्व पर्यावरण दिवस 2016

5 जून 2016

23 अप्रैल 2017

बढ़ता तापमान पिघलते हिमखंड

गत कुछ दशकों में वैश्विक तापमान निरन्तर बढ़ रहा है। बढ़ते प्रदूषण के कारण तापमान प्रभावित हो रहा है। जिसके कारण तीव्रता से जलवायू परिवर्तन हो रहा है। जुलाई 2016 गत वर्षों में सर्वाधिक गर्म मास रहा वहीं वर्ष 2016 सर्वाधिक गर्म वर्ष, और यह स्थिति केवल भारत की नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी देश इससे प्रभावित व परेशान हैं। वर्ष 2017 के आरंभ में जनवरी में बहुत कम सर्दी रही और फरवरी में अप्रैल जैसा मौसम। 18 अप्रैल को 40 से 46 तक का तापमान बहुत चिंतनीय है। 18 अप्रैल 2017 को दौसा में 46 डिग्री तापमान भविष्य के खतरे का स्पष्ट संकेत हैं। कहीं अति वर्षा, कहीं बर्फीला तूफान, कहीं कोई और प्राकृतिक आपदा यह सब जलवायू परिवर्तन का ही प्रभाव है। तापमान के निरन्तर बढ़ने के कारण हो रहे जलवायू परिवर्तन से वर्षा प्रभावित हो रही है और समयानुसार व सामान्य वर्षा की बजाय असामयिक व असामान्य (अति या कम) वर्षा हो रही है। अति वर्षा से बाढ़ आती है और विनाश का कारण बनती है वहीं कम वर्षा से पानी की कमी होती है जो अन्यथा और दैनिक परेशानी का कारण बनती है।

जल की आपूर्ति के लिए भूजल दोहन किया जाता है और इसी कारण देश भर में 50 प्रतिशत से अधिक भूजल ब्लाक डार्क जोन (खतरनाक स्थिति) में चले गए हैं और यह संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। तापमान को नियन्त्रण में रखने और गर्मी के मौसम में नदियों में जल आपूर्ति के लिए पहाड़ों पर हिमखंड (ग्लेशियर) का बहुत महत्व रहा है। बर्फ से ढ़के बहुत बड़े पर्वतीय भाग को हिमखंड (ग्लेशियर) कहते हैं और सर्दी में पहाड़ों पर जमने वाली बर्फ इसका विस्तार करती है। विश्व के भूभाग का 150 लाख वर्ग कि.मी. लगभग 10 प्रतिशत क्षेत्र हिमखंड हैं। एक समय था जब 32 प्रतिशत भू क्षेत्र व 30 प्रतिशत समुद्री क्षेत्र हिमखंड (ग्लेशियर) था और उसे बर्फ युग कहा जाता था। कुल हिमखंड का एन्टार्क्टिक (दक्षिणी ध्रुव) में 84.5 प्रतिशत व ग्रीनलैंड में 12: हिमखंड है। भारत में सबसे बड़े ग्लेशियर सियाचिन के अलावा गंगोत्री, पिंडारी, जेमु, मिलम, नमीक, काफनी, दरांग-दर्रा, हरी पर्वत, शी मे, रोहतांग, ब्यास कुंड, चन्द्रा, सोनापानी, ढाका, भागा, पार्बती, शीरवाली, चीता काठा, कांगतो, नन्दा देवी श्रंखला, पंचचुली, जैका आदि अनेक हिमखंड हैं। जम्मु कशमीर, अरुणाचल, सिक्किम, उतराखंड व हिमाचल में गर्मियों में सुहावने मौसम का श्रेय इन हिमखंडों को मिलता रहा है। 1995 व 1996 में अमरनाथ यात्रा के समय में स्वयं अनेक हिमखंड देखे थे और स्थानीय लोगों को उन पर ऐसे ही चलते देखा जैसे सड़क पर चलते हों। बढ़ते तापमान का प्रभाव मैदानी क्षेत्रों पर नहीं पर्वतीय क्षेत्रों पर भी स्पष्ट है और हिमखंडों की श्रंखला व क्षेत्र निरन्तर घटता जा रहा है जो एक और चिन्ता का विषय है। पहाड़ों पर जहां अप्रैल में सामान्यतः 4-6 डिग्री तक तापमान रहता है वह गौमुख क्षेत्र में गत सप्ताह 14 डिग्री तक हो चुका है। चारों ओर बर्फ हीं बर्फ दिखने वाले पहाड़ी क्षेत्रों में भी कहीं-कहीं बर्फ दिखती है। मौसम विज्ञान केन्द्र देहरादून के निदेशक विक्रम सिंह के अनुसार इस बार अप्रैल में सामान्य से 4 से 7 डिग्री तापमान अधिक है। हिमखंडों के ऐसे पिघलने से पानी की कमी और बढ़ेगी क्योंकि आवश्यकता से पूर्व व अधिक मात्रा में पानी नदियों के माध्यम से समुद्र में चला जायेगा जिससे तापमान नियन्त्रण भी प्रभावित होगा। आवश्यकता है पृथ्वी दिवस पर हर व्यक्ति जल-उर्जा तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने का संकल्प करे तथा हर वर्ष कम से कम एक पौधा अवश्य लगाये।

रमेश गोयलः लेखक पर्यावरण एवं जल संरक्षण को समर्पित कार्यकर्ता, पर्यावरण प्रेरणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा जल स्टार व अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं।

मो. 9416049757

पल पल 23 अप्रैल 2017

पटाखों पर हो पूर्ण प्रतिबन्ध

कई घटनाएं हुई जिसमें अनेक अग्निकांड हुए हैं। अकेले राउरकेला में 46 दुकानें जल गई थी और करोड़ों रूपये का सामान जल गया और कुछ लोग भी मारे गये।

पटाखों से न केवल वायु प्रदूषण फैलता है बल्कि उनकी तेज ध्वनि के कारण अनेक पक्षी मर जाते हैं और बालक व वृद्ध बहरे होते हैं। देश में बढ़ रहे बहरेपन के अनेक कारणों में पटाखों का शोर एक बड़ा कारण है। ध्वनि प्रदूषण के सम्बन्ध में उच्चतम न्यायालय का 30 अगस्त 2000 का निर्णय बहुत ही महत्वपूर्ण है। पटाखों के कारण बहुत गन्दगी फैलती है जिसे हम दिवाली के अगले दिन विशेष रूप से देख सकते हैं। पटाखा चलाते हुए व्यक्ति के जल जाने के भी अनेक मामले सामने आते हैं। पटाखा उद्योग में काम करने वाले हजारों लोग पटाखों के कारण असमय व दर्दनाक मौत के शिकार होते हैं। अनेक शहरों में कई परिवार पटाखा बनाते हुए अकस्मात काल का ग्रास बन गए बल्कि उनके पूरे के पूरे मकान आग में जलकर राख हो गए। बहुत कम लोग जानते हैं कि पटाखे फूटने से कॉपर, जिंक व मैग्निशियम आदि कैमिकल निकलते हैं जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक हैं। कॉपर सांस लेने में परेशानी पैदा करता है, वहीं लैड नवर्स सिस्टम पर विपरित प्रभाव डालता है। केडियम एनिमिया और गुर्दे (किडनी) फेल करने में सहायता करता है वहीं मैग्निशियम धूल से बुखार होने का खतरा होता है। सोडियम चर्म रोग व नाइटेड मानसिक बीमारियों को बढ़ावा देता है। जिंक उलटी की परेशानी पैदा करता है। रंगीन आतिशबाजी बनाने के लिए कई प्रकार के घातक कैमिकल मिलाए जाते हैं। क्षणिक प्रसन्नता की तुलना में इसके दुष्परिणाम सैकड़ों गुणा हैं, इसलिए कभी भी किसी भी अवसर पर पटाखा न चलाएं। पटाखों से प्राप्त खुशी सीधे सीधे नोटों को आग लगाने के समान है। सरकार को इसके निर्माण पर पूर्व प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

उन्होंने लिखा है कि ध्वनि प्रदूषण भी हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। अधिक शोर के कारण बहरापन, कान दर्द, कान में झनझनाहट, चिड़चिड़ापन, सिरदर्द, तनाव व डिप्रेशन बढ़ता है। सी.पी.सी.बी. अनुसार पटाखों का शोर निरन्तर बढ़ रहा है। 2015 में यह सर्वाधिक था। ध्वनि प्रदूषण के लिए सरकारी मानक तय हैं परन्तु उनका पालन नहीं होता जबकि वायु प्रदूषण को लेकर कोई मानक भी तय नहीं हैं। चूंकि पटाखों की संख्या तो निर्धारित हो ही नहीं सकती इसलिए तय मानकों का कोई अर्थ नहीं रह जाता। देश में कितना पटाखा किस किस स्तर का बनता है और चलता है, का कोई आंकड़ा कहीं भी उपलब्ध नहीं है। पटाखे का अधिकांश व्यापार बिक्री आफ दी रिकार्ड होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन अनुसार 2012 में प्रदूषण के कारण लगभग 70 लाख लोगों को जान गवानी पड़ी है जिसका हृदय रोग, सांस सम्बन्धी बीमारियों, कैंसर से गहरा सम्बन्ध है। पटाखे से उत्पन्न वायु व ध्वनि प्रदूषण भी इसमें भागीदार है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्वास्थ्य निदेशक डा. मारिया अनुसार पहले की तुलना में प्रदूषण से स्वास्थ्य विशेषकर हृदय रोग के मामले में खतरा बहुत अधिक बढ़ा है। इसी संगठन के सहायक महानिदेशक डा. फलाविया वस्टेरियो अनुसार उन बच्चों, महिलाओं और वृद्धों, जो अधिकांश समय घर के भीतर ही रहते हैं, को घर के अन्दर पाए जाने वाले प्रदूषण का भारी नुकसान उठाना पड़ता है। बढ़ते प्रदूषण के कारण वैश्विक तापमान बढ़ रहा है जो जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारण है और जलवायु परिवर्तन भविष्य के लिए अन्धकारमय व चुनौतियों भरा भयावह दृश्य प्रस्तुत कर रहा है।

इसलिए हम सब इसे गम्भीरता से लें और अपने व अपनी भावी पीढ़ियों के स्वास्थ्य के मध्यनजर प्रदूषण बिलकुल न फैलाएं।

रमेश गोयल

20 दिसम्बर 2017

पल पल

28 दिसंबर 2017

सार समाचार

वर्षा जल संग्रहण को देनी होगी प्राथमिकताः गोयल

पल पल न्यूजः सिरसा, 27 दिसंबर। मुख्यमन्त्री हरियाणा के ओएसडी कैप्टन भूपेन्द्र सिंह द्वारा खेती के लिए पानी हर हाल में

उपलब्ध कराने संबन्धी वक्तव्य का स्वागत करतें हुए जल स्टार रमेश गोयल ने कहा है कि आखिर पानी आएगा कहां से। सिरसा जिला ही नहीं हरियाणा के आधे से अधिक भूजल ब्लाक डार्क जोन में जा चुके हैं तथा शेष की स्थिति भी चिन्ताजनक है। उन्होंने इस संवाददाता को एक विशेष भेंट में बताया कि बढ़ते प्रदूषण के कारण तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण जलवायु परिवर्तन हो रहा है और वर्षा प्रभावित हो रही है। वर्षा जल संग्रहण सिस्टम को अनिवार्य रूप से लागु करने का सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि सरकार इसे प्राथमिकता दे तभी पानी की कमी को कुछ कम किया जा सकेगा। उल्लेखनीय है कि गोयल गत कई वर्षों से जल संरक्षण पर एक मिशन भाव से कार्य कर रहे हैं। हरियाणा प्रान्त के लिए जल स्टार अवार्डी हैं। मई 2017 व नवंबर 2017 में दो बार नगर निगम गुरूग्राम के विशेष आमन्त्रण पर गुरूग्राम में वर्षाजल संरक्षण व संग्रहण मिशन पर सहयोग कर आये हैं।

28 दिसम्बर 2017

निर्जला एकादशी: पर्यावरण और प्लास्टिक कचरा

प्लास्टिक इस समय पर्यावरण व स्वास्थ्य के लिए सर्वाधिक खतरनाक है। हजारों टन प्लास्टिक कचरा हर वर्ष बढ़ रहा है। प्लास्टिक जलाना भी खतरनाक है और अन्यथा भी यह सैकड़ों वर्ष तक समाप्त नहीं होता। इसी कारण विश्व पर्यावरण दिवस 2018 का ध्येय वाक्य रखा गया था ''प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करें'' भारत के हर शहर गांव में गर्मी में विशेषकर निर्जला एकादशी को ठंडे व मीठे पानी की छबील लगती है और अधिकांशत डिस्पोजेबल प्लास्टिक गिलास प्रयोग होते हैं तथा देश भर में एक दिन में ही इसकी संख्या करोड़ों में हो जाती है। एक अनुमान अनुसार प्रतिवर्ष समुद्रों में 80 लाख टन से अधिक प्लास्टिक कचरा डाला जा रहा है जिसके कारण जल जीव तीव्रता से समाप्त होते जा रहे हैं। कुछ स्थानों पर तो यह 75 प्रतिशत तक कम हो गए है। प्रदूषण के कारण 40 प्रतिशत पक्षी जीव कम हो गए हैं और अधिकांश लुप्त होने के कगार पर हैं। पशु जनसंख्या परिस्थिति तन्त्र के कारण 1970 से निरन्तर कम हो रही हैं। ईडीएन स्वास्थ्य, प्लास्टिक प्रयोग से होने वाली हानियों, समुद्र में प्रदूषण, जलजनित व अन्य जीवों को होने वाले प्रभावों के बारे में हर वर्ष लाखों करोड़ों लोगों को जागृत करती है। प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करने के लिए एक दीर्घकालिन योजना तैयार की गई है जिसमें एक बारगी प्लास्टिक प्रयोग न करना, प्लास्टिक की 100 प्रतिशत रिसाइकलिंग व्यवस्था, सरकार और कार्पोरेट का दायित्व निर्धारण तथा प्लास्टिक प्रयोग पर मानवीय व्यवहार बदलना आदि मुख्य लक्ष्य है। पर्यावरणीय असन्तुलन बहुत बढ़ रहा है जिसके परिणाम स्वरूप अचानक बाढ़, भयंकर तूफान व अन्य प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं। जंगलों में आग लग जाना सामान्य हो गया है जिसके कारण जंगल कम होते हैं वहीं वह आग वैश्विक तापमान बढ़ाने का एक और कारण बनती है। पृथ्वी केवल एकमात्र ग्रह है जहां जीवन है इसलिए हमारा दायित्व और भी बढ़ जाता है कि हम भावी पीढ़ी और प्रकृति की रक्षा करें। पृथ्वी और इसके परिस्थिति तन्त्र हमें जीवन और जीविका प्रदान करते हैं। हमारा सामूहिक दायित्व है कि हम प्रकृति और पृथ्वी के साथ वर्तमान भावी पीढ़ी की आर्थिक, सामाजिक व पर्यावरणीय आवश्यकताओं के साथ सन्तुलन और तारतम्य स्थापित करें। पर्यावरणविद् रमेश गोयल ने इस पर चिन्ता व्यक्त करते हुए अपील की है कि आगामी 13 जून को निर्जला एकादशी के अवसर पर प्लास्टिक डिस्पोजेबल गिलास की बजाय 20-30 गिलास स्टील के रखें। एक टब में पानी में थोड़ी लाल दवाई डाल दें। स्टील गिलास पानी पिलाने के बाद उसमें डाल कर निकाल लें और पुन प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि अपने क्षेत्र में होने वाले कचरे का अनुमान लगाए और उससे स्वयं बचें तथा मोहल्ले, शहर व देश के लिए समस्या न बढ़ाएं। डिस्पोजेबल पर होने वाला खर्च बचेगा, गन्दगी नहीं फैलेगी, सफाई नहीं करनी पड़ेगी। आपकी थोड़ी सूझबूझ भविष्य को गर्त में ले जाने से बचायेगी। गोयल ने कहा कि आपके पास जो भी प्लास्टिक सामान, पोलिथिन थैली या अन्य कुछ है, उसे कूड़ा कचरा में न डालें बल्कि पुनः प्रयोग करें। बाजार से सामान लाने के लिए थैली नहीं कपड़े का थैला काम में लाएं।

रमेश गोयल, राष्ट्रीय मन्त्री पर्यावरण, भारत विकास परिषद। मोबाइल नंबर: 094160049757

12 जून 2019

पानी की बचत–आवश्यकता और उपाय 2005

–रमेश गोयल

"जल ही जीवन है ।" यह बात जानते हुए भी हम पानी को बहुत बरबाद करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता है। भू व जल विज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से भू–जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे के संकेत हैं कि आने वाले समय में पानी के लिए लड़ाइयां हो सकती हैं। दो वर्ष पूर्व ही अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम पर लड़ा जाएगा। केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश के 16 राज्यों में पिछले एक दशक में भू–जलस्तर में चार मीटर की गिरावट आई है। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 5000 घन मीटर के स्थान पर मात्र 2200 घन मीटर ही रह गई है।

पानी के लिए लड़ाई गली मौहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक आप देख सकते हैं। पंजाब–हरियाणा, कर्नाटक–तमिलनाडु, हरियाणा–दिल्ली, उत्तरप्रदेश –हरियाणा, पंजाब–राजस्थान जैसे प्रांतों का पानी के लिए आपसी तनाव जग जाहिर है। पानी के लिए विभिन्न प्रान्तों में आन्दोलन, पुलिस फायरिंग, जन हानि, आयोग गठन, एक साधारण प्रक्रिया बन गई है। जून 2005 में राजस्थान में पानी की मांग कर रही भीड़ पर पुलिस फायरिंग के कारण पांच लोग मारे गए थे। स्रोतों में पानी लगाने के झगड़ों के कारण देश में लोगों के मारे जाने की घटनाएं समाचार पत्रों में रोज छपती हैं। पानी की कमी के कारण किसी गांव के लड़के अविवाहित रह जाते हैं। तो कभी भगवान जगननाथ मंदिर के प्रांगण में पानी की कमी अनुभव की जाती है। पानी को लोग मुफ्त का माल व प्रकृति का अनमोल उपहार मानते हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है।

भू–जल के अन्धाधुंध दोहन के कारण प्राकृतिक आपदाएं भूकम्प आदि का प्रकोप बढ़ा है। केंद्रीय अथवा राज्य के जल नियंत्रण बोर्ड से बिना स्वीकृति के लोग भू–जल का दोहन करके पानी बेच रहे हैं।

बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में भी बहुत पानी बरबाद करते हैं। उदाहरण के रूप में जैसे जब सुबह शेव करने के लिए अपना ब्रुश गीला करने के लिए टूंटी खोलते हैं तो कुछ ही लोग उसे बंद करते हैं अन्यथा शेव करने तक टूंटी से पानी बहता रहता है और काफी लीटर साफ पानी नाली में बह जाता है। इसी प्रकार ब्रुश–मंजन करते समय जब तक आप कूरला नहीं करते तब तक पानी बहता रहता है और साफ पानी बरबाद होता रहता है। जब कूलर में पानी भरने के लिए पाईप लगा दिया जाता है और अपने काम में लग जाते हैं तब काफी पानी बह जाता है और कितना पानी बह गया आप नहीं जानते। इसी प्रकार से आप नहाते समय जब अपनी बाल्टी में टूंटी खुली छोड़ कर मग से नहाने लगते हैं तो आप भूल जाते हैं कि आपके साबुन लगाते समय पानी की बाल्टी भर गई है और आपने टूंटी बंद नहीं की और पानी नाली में बहता रहता है। वास्तव में नहाने के लिए एक या दो बाल्टी पानी प्रयोग करते हैं परंतु जो पानी नाली में बह गया वह पानी आठ–दस बाल्टी तक हो सकता है क्योंकि आप साबुन लगाते समय कितना समय लगाते हैं वो उस बात पर

निर्भर करता है। कपड़े धोते समय हमारी माताएं बहनें कपड़े धोती हैं तो बहुत पानी बरबाद करती हैं। टूंटी खुली छोड़ देती हैं। पानी में कपड़ों को खंगालते समय टूंटी चलती रहती है बाल्टी भरती रहती है और काफी पानी बहता रहता है और बाल्टी भरने के बाद टूंटी को बंद नहीं करती। बहुत से घरों में मशीन से कपड़े धोती हैं तो पानी की पाईप को सीधे मशीन से जोड़ देती हैं और मशीन से पानी बहता रहता है उन्हें ध्यान ही नहीं रहता कि पानी दस मिनट चला या बीस मिनट चला और काफी पानी नाली में बहता चला जाता है और वह अपने काम में लगी रहती हैं। यदि इस पानी को बहने से रोकना है तो बाल्टी में पानी को लेकर कपड़े खंगालें। टंकी भरने के बाद मोटर बंद न करने के कारण सैंकड़ों लीटर पानी नाली में बह जाता है। इसी प्रकार बहुत से अन्य प्रकार से भी पानी बरबाद किया जाता है।

पानी की बचत आप किस प्रकार कर सकते हैं? यह थोड़े से ध्यान देने का विषय है। हवा, पानी, मिट्टी आदि प्रकृति की देन है, जिसे हम मुफ्त का माल समझते हैं जबकि ऐसा नहीं है। हमारी केंद्र सरकार भी इस विषय में चिंतित है। बार–बार पानी की बचत के विषय में चिन्तन करने में लगे हैं। हमारे राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने मई 2005 में एक बैठक में कहा था कि हमे पानी की बचत के लिए मिशन भावना से काम करना है यानि यह इतना बड़ा प्राजेक्ट हो गया कि पानी की बचत नहीं करेंगे तो 'बिन पानी सब सून' वाली बात जैसे पानी के बिना मच्छली तड़पती है उसी प्रकार से एक दिन ऐसा आएगा कि आप पानी के बिना तड़पने लगेंगे।

मैं आपको यह बताना चाहुंगा कि आप इसमें क्या योगदान कर सकते हैं? यानि आप पानी की बचत कैसे कर सकते हैं। पुरानी कहावत है कि बूंद–बूंद से घट भरता है लेकिन हम सब मिलकर हजारों लाखो गैलन ही नहीं करोड़ों गैलन पानी बचा सकते हैं। यदि एक शहर में सभी मिलकर यह संकल्प करलें कि हम पानी को बरबाद नहीं होने देंगे तो निश्चित ही उस शहर में कभी भी पानी का संकट होगा ही नहीं चाहे वह क्षेत्र बाहरी क्षेत्र में ही क्यों न हो। आप यह निश्चिय करें कि आप अभी से पानी को बरबाद नहीं करेंगे। आप अपनी आवश्यकता में कटौती करके पानी की बचत करते हैं तो वह बहुत ही सराहनीय है लेकिन आप अपनी आवश्यकता को कम किए बिना भी पानी की बरबादी को रोक लें तो आप देश व समाज के लिए लाभकारी काम करेंगे। आप कभी भी नल को बिना आवश्यकता के खुला न छोड़ें, शेव,ब्रुश या हाथ–मुंह धोते समय नल को बिना पानी प्रयोग के समय बंद कर दें और नहाते हुए पानी की बाल्टी भर जाने के बाद आप टूंटी तुरंत बंद कर दें। यदि आवश्यकता हो तो उसे दौबारा खोल कर बाल्टी में पानी डालें। हाथ धोने वाले उस वाशवेशन का पानी आप नाली में जाने देने की बजाए आप के घर में कोई लान है तो उसमें ऐसी व्यवस्था करवाएं कि यह पानी उसमें चला जाए जिससे और भी अधिक लाभ होगा जिससे आपके लान में अलग से पानी नहीं देना पड़ेगा। यदि आपके घर में कोई पशु है और उसे नहलाते हैं तब भी आप ध्यान रखो कि उसे ऐसे स्थान पर नहलाएं कि वह पानी बरबाद न हो बल्कि यदि आपके घर के आस–पास लान है तो उसमें पानी उपयोग में लाया जा सकता है। पानी की पाईपों में कई बार रिसाव होता है अपने घर में आने वाले कनैक्शन या आसपास के किसी पाईप में रिसाव होता तो उसे तुरंत ठीक करवाना चाहिए जिससे आपके घर में सिलन भी नहीं रहेगी। आपको नुक्सान नहीं होगा और पानी की बरबादी से भी बचेंगे। यदि किसी सार्वजनिक स्थल पर पाईप पर टूंटी नहीं लगी है या पाईप रिसाव कर रहा है तो ऐसी दशा में आप नगर परिषद् या ग्राम पंचायत या उसके संबंधित अधिकारी को उन्हें सूचित करें और प्रयास करें कि वह जल्दी से जलदी रिसाव बंद हो जाए। कूलर

में पानी डालते हुए ध्यान रखें कि कूलर भरने के बाद पानी बाहर न निकले। इसी प्रकार जब आप अपनी टंकी में पानी चढ़ा रहे होते हैं तो मोटर चला कर भूल न जाएं कि पानी की टंकी कब भर गई और आपको पता न लगे व पानी खुले में या नाली में बहता रहे। बर्तन साफ करते समय जो पानी टब में बच जाता है उसे नाली में डालने की बजाए फर्श आदि धोने में काम लें या लान में डाल दें। कोई मिट्टी या रेत लगी वस्तु को यदि आपने साफ करना है तो पहले किसी कपड़े से झाड़ पोंछ लें ताकि कम पानी में वो चीज साफ हो जाए। जब हम पानी की टंकी भरने पर पानी बहना रोकेंगे तब हमें पानी की बचत भी होगी और बिजली की भी बचत होगी। आप स्वयं इस बात पर निर्णय करें कि आप किस प्रकार से पानी को बरबाद होने से रोक सकते हैं। उसमें किस प्रकार से बचत कर सकते हैं। पानी की जो आवश्यकता आपकी है उसको घटा कर आप पानी की बचत कर सकते हैं। आप अपने परिजनों, मित्रों और आस–पास के लोगों को पानी बचत के लिए प्रेरित करेंगे परिजनों ऐसा मुझे विश्वास है।

जय भारत।

प्रांतीय अध्यक्ष
भारत विकास परिषद्
20, आरएसडी कालोनी,
सिरसा। (हरियाणा)

भू जल दोहन

विश्व बैंक की रिर्पोट अनुसार भारत विश्व में सर्वाधिक भूजल प्रयोग करने वाला देश है और पुरी दुनिया के एक चोथाई से अधिक भाग का प्रयोग करता है । गिरते भूजल स्तर को रोकने के लिए शीध्र व सार्थक उपायों की आवश्यकता है । देश के 5723 भूजल ब्लाक में से लगभग 30प्रतिशत भूजल ब्लाक खतरनाक, अर्ध खतरनाक या चिन्तनीय स्थिति में हैं और यह स्थिति तेजी से बिगड़ रही है । 2025 तक देश के लगभग 60 प्रतिशत भूजल ब्लाक खतरनाक स्थिति में पहुंच जाने की सम्भावना है । वैश्विक तापमान इसे और अधिक गति दे सकता है । केन्द्रीय जल संसाधन मन्त्रालय अधीन केन्द्रीय भूजल बोर्ड स्थापित है जो राष्ट्रीय स्तर पर भूजल के साधनों की सर्वे, भूजल दोहन, जल का स्तर (क्वालिटी), अनुसंधान व विकास का ध्यान रखते हुए राज्यों को भूजल के विषय में वैज्ञानिक व तकनीकी विषयों पर मार्ग दर्शन करता है । बोर्ड देश में भूजल स्तर को वर्ष में चार बार अपने हजारों नैशनल हाईड्रोग्राफ स्टेशनों के माध्यम से चैक करता है । भूजल प्रदूषण भी इसी वर्ग में आता है । नलकूप भूजल दोहन का सबसे बड़ा स्त्रोत है । हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व प0 उत्तर प्रदेश का नाम भूजल दोहन में प्रमुख है । हरियाणा में 1966–67 में 27957 के मुकाबले इस समय लगभग सात लाख नलकूप चल रहे हैं जो केवल अज्ञानता व लापरवाही के चलते आवश्यकता से अधिक पानी बेकार बहाते हैं जिसके कारण करोड़ों लीटर भूजल प्रति वर्ष व्यर्थ बहता है । नलकूपों के लिए निशुल्क या मामूली राशि पर बिजली उपलब्ध कराना भी नलकूप व्यर्थ व अधिक चलने का एक कारण है । हरियाणा के कुल 119 जोन में से आधे से अधिक डार्क जोन में हैं और शेष की स्थिति भी डार्क जोन की ओर तेजी से बढ़ रही हैं । 3–4 दशक पूर्व 30–40 फूट गहराई पर मिलने वाले भूजल का स्तर अब 250 फूट से अधिक नीचे चला गया है जो कहीं कहीं 400 फूट भी है । हरियाणा का जींद जिला सर्वाधिक नलकूपों पर निर्भर है और सफीदों मंडल में 810 फूट तक पानी की गहराई जा चूकी है । कुरूक्षेत्र जिला में सभी पांचो ब्लाक अत्याधिक भूजल दोहन ब्लाक हैं। धान की खेती के कारण न केवल सिरसा डार्क जोन में है बल्कि अन्य जिलों में भी लगभग ऐसी ही स्थिति है । हरियाणा सरकार द्वारा वर्ष 2011 को जल संरक्षण वर्ष अवश्य घोषित किया गया परन्तु भूजल स्तर बढ़ाने के सम्बन्ध में कोई स्थाई व ठोस कार्य नहीं हुआ । राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में वर्षा जल संरक्षण के लिए वाटर हारवैस्टिंग सिस्टम लगाने के निर्देश जारी किए गए परन्तु परिणाम शुन्य के निकट है । ऐसे में सरकार द्वारा गत दिनों एक लाख नए नलकूपों को बिजली कनैक्शन जारी करने की घोषणा हास्यास्पद् व दूरदृष्टि रहित लगती है ।

राजकीय भवनों में वर्षा जल हारवैस्टिंग के लिए केन्द्रीय जल संसाधन मन्त्रालय द्वारा शहरी विकास मन्त्रालय को छतों के माध्यम से वर्षा जल संग्रहण के बारे में दशक पूर्व लिखा गया था परन्तु प्रान्तीय शहरी विकास एजेनसियां इसे गम्भीरता से नहीं ले रही हैं । । वाटर हारवेस्टिंग का अर्थ है –1. अधिक वर्षा जल को जमीन में उतारना 2. वर्षा जल का सही स्टोरेज 3. कृषि में प्रयोग के समय पानी को मिट्टी की निचली स्तहों तक पहुंचाना । 4. संरक्षित पानी को अधिकतम उपयोगी ढंग से प्रयोग करना । पुरे विश्व में पानी रिचार्ज का प्रचलन बढ़ रहा है और पुरानी संस्कृति अनुसार जल स्टोरेज के साधनों को नई तकनीक के साथ जोड़कर काम में लिया जा रहा है । केन्द्रीय भूजल बोर्ड ने अनुसंधान व विकास के लिए भी विभिन्न प्रान्तों के लिए कई स्कीमें तैयार की हैं परन्तु कार्य सरकारी गति से ही चल रहा है । केन्द्र सरकार द्वारा 1996 में रायपुर (म0प्र0) में राजीव गांधी राष्ट्रीय भूजल अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान भी स्थापित किया गया था । बोर्ड की 'भूजल न्यूज' नामक पत्रिका भूजल सम्बन्धी पूर्ण जानकारियों का मुखपत्र है । नागार्जून सागर प्राजैक्ट, आन्ध्रप्रदेश, इंन्दिरा गान्धी नहर परियोजना (द्वितीय चरण) राजस्थान, कोसी कनाल कमांड ऐरिया, बिहार, गण्डक कनाल कमांड़, बिहार आदि भूजल प्रयोग अध्ययन की सार्थक योजनाएं रही हैं । सिंचाई अधिकारी यदि इसे गम्भीरता से लें तो जहां वाटर हारवैस्टिंग सिस्टम के द्वारा भूजल स्तर बढाया जा सकता है वहीं दुसरी ओर सुक्षम सिंचाई प्रणाली द्वारा पानी की

खपत को कम किया जा सकता है । धान, तम्बाकु व गन्ने की खेती में जल की सर्वाधिक खपत होती है । सरकारी स्तर पर इनकी खेती के क्षेत्र को घटाने के लिए प्रयास करना चाहिए था परन्तु ठीक इसके विपरीत धान की खेती का क्षेत्र पिछले चार दशकों में 10 गुणा से अधिक बढ़ा है और घटती वर्षा व नदी जल कम उपलब्धता के कारण नलकूपों से अथाह मात्रा में जल दोहन किया जा रहा है। नासा सैटेलाईट इमेजनरी अनुसार भारत में गत छः वर्षो (2002–08) में ही 109 क्यूसिक भूजल कम हुआ है । यह वह भयावह स्थिति है परन्तु इससे निपटने के लिए सम्बन्धित विभाग युद्ध स्तर पर कार्य करने की बजाय योजनाओं व घोषनाओं पर लगा हुआ नजर आता है । कहीं भूकम्प तो कहीं धरती फट जाना, पूरा का पूरा भवन जमीन में धंस जाना या चट्टानों का खिसकना आदि घटनाएं अधिक भूजल दोहन के परिणाम स्वरूप ही सामान्य होती जा रही हैं । कई बार इनके कारण बहुत बड़ी मात्रा में जान–माल की हानि होती है परन्तु हम उससे कोई विशेष सबक नहीं ले रहे । पैतृक जल संरक्षण साधनों जैसे तालाब, बावड़ी, कुंड आदि को छोड़ते जाना भी भूजल दोहन का एक कारण है । नदी के किनारे वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम हो तो अतिरिक्त पानी जमीन में चला जायेगा और बाढ़ के कारण होने वाली तबाही भी कम होगी ।

सरकार को अधिक भूजल दोहन रोकने के लिए न केवल मुफत या कम दर पर बिजली देना बन्द करना चाहिए बल्कि न्यूनतम कुछ यूनिटों के बाद अधिक दर से चार्ज करना चाहिए । केन्द्रीय योजना आयोग ने भी ऐसा करने की सलाह दी है । किसानों को भूजल दोहन से होने वाली भविष्य की भयावह स्थिति के बारे में जागरूकता अभियान चलाकर विडियोग्राफी के माध्यम से समझाना चाहिए । जागरूकता मेले लगाने चाहिएं जिसमें विभिन्न प्रकार से अधिक भूजल दोहन के परिणाम समझाये जायें वहीं सुक्षम जल प्रणाली अपनाने वालों को प्रोत्साहन स्वरूप सबसिडी देनी चाहिए । हमें जन जन तक यह सन्देश पहुंचाना होगा ।

रमेश गोयल,एडवोकेट,
20 आर एस डी कलोनी, सिरसा (हरियाणा)
09416049757 ईमेल rameshgoyalsrs@rediffmail.com